Visit Dwarkadheeshvastu.com For

FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in CD format. CD Cover can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in PENDRIVE and EXTERNAL HARD DISK.

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

Braj-Bhoomi-Mohini

Hindi

अनुक्रमणिका

1.	प्रारम्भिक पृष्ठ	एक से तीन
2.	अनुक्रमणिका	चार
3.	प्रकाशकीय	पाँच
4.	सम्मतियाँ	
i.	परम पूजनीया भक्तिमती ऊषा बहनजी	छः
ii.	श्रीबालकृष्णदासजी महाराज	सात
iii.	श्रद्धेय श्रीराधा बाबा	आठ
iv.	श्रद्धेय पं. श्रीगयाप्रसाद जी	आठ
v.	श्रद्धेय आनन्ददास बाबा	आठ
vi.	श्रद्धेय प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी	नौ
vii.	पूजनीय श्री बिहारी दास जी 'वृन्दावनी'	नौ
viii.	पूजनीय श्री मनोहर दास जी	दस
5.	प्राक्कथन	ग्यारह से चौदह
6.	पुरोवाक्	पन्द्रह-सोलह
7.	पूजनीय बाबा भक्ति विजय	सत्रह
8.	चित्र सूची	अठारह

प्रथम भाग

9.	स्थलियों का परिचय	
i.	ब्रजभूमि, ब्रज शब्द की व्युत्पत्ति, पौराणिक ब्रज	1
ii.	ब्रज की सीमा-परिक्रमा का स्वरूप	7
iii.	लीला स्थलियों का योगदान	11

द्वितीय भाग

i.	प्रथम खण्ड मथुरा	15
ii.	द्वितीय खण्ड गोकुल महावन	47
iii.	तृतीय खण्ड श्री गिरिराज	85
iv.	चतुर्थ खण्ड कामवन	167
v.	पंचम खण्ड वृषभानुपुर	185
vi.	षष्टम खण्ड श्री नन्दगाँव	223
vii.	सप्तम खण्ड श्रीवृन्दावन	307
10.	सहायक ग्रन्थ सूची	403
11.	ब्रज का मान चित्र	404
12.	अन्य प्रकाशन सूची	406

श्रीवृन्दाबिहारिणे नमः

पूजनीय संत श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी महाराज

श्रीविजयजी ने जो "ब्रज भूमि मोहिनी" नाम की पुस्तक लिखी है ग्वाकूँ मैंने इत उत तें देख्यो। देख्यो का सूँघ्यो। जो लेखक होतयें; वे पढ़त नाहें खाली सूँघिके तत्थु निकार लेत हैं। मोय जिइ पुस्तक बहुतई मलूक लगी। वैसे मैंने ब्रज के ऊपर कैऊ पुस्तक देखीयें। परन्तु विजयजी ने जितनी विस्तार तें जि लिखी है ग्वैसी स्यात ई काऊ ने लिखी हो। जामें ब्रज के सबई प्रसिद्ध-प्रसिद्ध स्थानानि के सम्बन्ध में शास्त्रीय विवेचन करयो ए। जो वाद-विवाद के विषय हैं गुनतें जे तटस्थ रहे हैं। ब्रज के स्थाननि की ब्रज के रसिकनि की ब्रज के संत महात्मानि की बातें चाहें संक्षेप में ही हों सुन्दर ढँगतें लिखी हैं। ऐसी सुन्दर पुस्तक लिखने पै मैं लेखक कूँ "साधुवाद देतूँ।"

ब्रजेन्द्रनन्दन के चरननि में जिही प्रारथना है कि विजयजी ऐसी और भी पुस्तक लिखते रहें।

सङ्कीर्तन भवन, बंशीवट, वृन्दावन **प्रभुदत्त ब्रह्मचारी**
अधिक श्रावण शुक्ला सप्तमी सं. २०४३ वि.

'ब्रज भूमि मोहिनी' में विश्वविमोहन भगवान् ब्रजेन्द्रनन्दन की नित्य लीला-भूमि ब्रज-वसुन्धरा का मोहक वर्णन पढ़कर किसका मन जाने-अनजाने (शरीर से नहीं तो मन से ही सही) ब्रज की मोहिनी वीथियों में विचरणशील न हो उठेगा। जिन्होंने ब्रज को देखा ही नहीं, वे यदि इसे पढ़कर ब्रज दर्शन के लिए लालायित हो तो आश्चर्य ही क्या है, जो लोग ब्रज भूमि के दर्शन-निवासादि का सुदुर्लभ सौभाग्य प्राप्त कर चुके हैं, वे भी एकबार पुनः सम्पूर्ण ब्रज यात्रा के लिये उत्कंठित हो उठेंगे, ऐसी मेरी धारणा है।

वर्षों पूर्व भगवान् विश्वनाथ की नित्य निवास-स्थली काशीपुरी के दर्शन, भ्रमण आदि का सुयोग प्राप्त हुआ था। वहीं एक खण्डहर जैसे मकान की दीवार पर लिखा देखा था–

प्रेम नगर ब्रज भूमि है, जहाँ न जावै कोय।
जावै तो जीवै नहीं, जियै तो बौरा होय॥

कदाचित् 'बावरा' होने या मरने की तैयारी अभी तक मैं कर नहीं पाया हूँ, इसलिए आपको भी उधर सोच-समझ कर कदम रखने की सलाह दूँगा।

अक्षय तृतीया २०४२, श्रीवृन्दावन धाम **बिहारीदास 'वृन्दावनी'**

दो शब्द

ब्रज भूमि का वर्णन बहुतों ने किया है, परन्तु (पूर्णरूप से) सम्पूर्ण, परिचय उनमें नहीं मिलता, इसलिए ग्रन्थकार ने, पुराण तथा महानुभावों द्वारा लिखित ग्रन्थों के तथा विश्वसनीय सन्तों की मुखश्रुत चर्चा के आधार पर, सभी के भावों को सुरक्षित रखते हुए, आलोचना रहित इस ग्रन्थ का लेखन, सम्पादन किया है।

आज से साढ़े पाँच हजार वर्ष पूर्व द्वापरान्त में श्रीकृष्ण की लीला इस ब्रज मण्डल में प्रत्यक्ष रूप से अवतरित हुई थी। यह वही गिरिराज गोवर्धन पर्वत है, जिन्हें श्रीकृष्ण ने अपने किन्नी उंगली पर सात दिन तक सतत् धारण किया था, वही यमुनाजी हैं जो श्रीकृष्ण के अंग स्पर्श से नीलिमा लिए अनन्त लीलाओं को (जल विहार, जलकेलि) अपने में संजोकर प्रेमीजनों को प्रत्यक्ष दर्शन कराने में समर्थ हैं। यह वही ब्रज रज है, श्रीकृष्ण चरण स्पर्शित, जिसकी उद्धवजी ने रो-रोकर याचना की थी। उस समय व अब के समय में, इसमें इतना ही अन्तर है कि उस समय प्रकट लीला सभी को सहज ही देखने में आती थी, अब भी वह यहाँ निरन्तर हो रही है। इस बात का रहस्य आपको पुराणान्तर्गत, वज्रनाभ-शाण्डिल्य ऋषि के सम्वाद के पढ़ने से ज्ञात हो सकता है।

काल के प्रभाव से लुप्त प्रायः इन स्थलियों को प्रेमावतारी श्रीचैतन्य महाप्रभु ने अपने अन्तरङ्ग भक्तों को ब्रज में भेजकर ब्रज की लुप्त स्थलियों को पुनः प्रकट कराया। श्रीमन्चैतन्य महाप्रभु स्वयं भी ब्रज-दर्शनार्थ आये व अत्यन्त रसमयी स्थली श्रीराधाकुण्ड को स्वयं प्रकट किया। लेखक ने जहाँ-तहाँ उन्हीं के शब्दों में उद्धरण दिये हैं। श्री वल्लभाचार्यजी ब्रज भूमि में आये व जहाँ-तहाँ भ्रमण कर ब्रज भूमि के महत्त्व को प्रकट किया व ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा की परिपाटी चलाई, जो आज भी चल रही है।

लेखक का प्रयास आपको इस स्थली की रसमयता के नजदीक से नजदीक लाने का है, जिससे आप इस स्थली के पूर्ण महत्त्व से परिज्ञात हो, जीवन लाभ प्राप्त कर सकें। ब्रज-रस के साधकों के लिए यह एक अमूल्य निधि है। मेरे ख्याल में यह ग्रन्थ बहुत रोचक, हृदय स्पर्शी तथा पथ-प्रदर्शक सिद्ध हुआ है।

इस अनुपम ग्रन्थ को आप चिन्तन मनन पूर्वक पढ़कर आत्मलाभ प्राप्त कर सकेंगे।

श्रीवृन्दावन धाम **बाबा मनोहरदास**

अक्षय तृतीया २०४३

प्राक्कथन

प्रेरणा

श्रीधाम में स्थायी रूप से आ जाने पर ब्रज की स्थलियों में विचरण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसी बीच श्रीराधाकुण्ड रहने का सुयोग भी मिला। वहीं स्थलियों की जानकारी करने की जिज्ञासा हुई। बाबा श्रीमनोहरदासजी ने संकेत कर कुछ ग्रन्थों की जानकारी दी। वे ग्रन्थ श्रीराधा कुण्ड में सहज ही प्राप्त हो गये। मैंने ग्रन्थों से यथा सम्भव श्रीकृष्ण से सम्बन्धित लीला स्थलियों का ब्यौरा एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। स्थलियों में विचरण कर वास्तविक अनुभूति होनी चाहिए थी तथा उसी में डूबना अभीप्सित था, परन्तु यह तथाकथित संकलन प्रकाशित होने का सुयोग ढूँढ़ने लगा।

इस ग्रन्थ का प्रणयन वास्तव में सम्वत् २०३२ में ही हो चुका था। पागल बाबा के यहाँ जब नया प्रेस लगा तो इस ग्रन्थ के प्रकाशन की बात चली तथा सहज ही सब तय हो गया। मैंने हस्तलिखित कुछ सामग्री प्रकाशन के लिए दे दी। उस समय दिवंगत श्रीरवि पंडित वयोवृद्ध विद्वान तथा गौड़ीय ग्रन्थों के विज्ञ, बाबा के प्रकाशन विभाग की व्यवस्था में सहयोग देते थे। पुस्तक के प्रतिपाद्य विषय को देख, प्रकाशित करने की प्रबल इच्छा होने पर भी, किन्हीं कारणों वश, उन्होंने कुछ प्रसंगों को बाद करने की बात मुझसे कही। किसी भी प्रमाण के अभाव में मैं उन परिवर्तनों को स्वीकार नहीं सका जिसका मुझे खेद है, और इस ग्रन्थ का वह अंश लगभग एक माह बाद मेरे पास वापिस आ गया।

यह ग्रन्थ छप जाता, ऐसा आग्रह मेरे अभिभावकों का रहा। प्रयास भी किए गए, परन्तु अर्थ व्यय का प्रश्न मेरे सामने अत्यन्त जटिल था तथा बना रहा। सहज ही एक सुयोग बन गया।

प्रयत्न

यह ग्रन्थ मेरा नहीं हैं, आपका है अथवा उन सभी आदि आचार्यों, रसिकों, भक्त महानुभावों का है, जो इस ग्रन्थ के लिखने में मेरे लिए सहायक रहे हैं अथवा जिनके ग्रन्थ वाणी तथा अनुभव का उपयोग इस ग्रन्थ के प्रणयन में किया गया है। इसमें न तो मेरा कुछ प्रयत्न ही है और न योगदान ही। इस ग्रन्थ के प्रसंग-वर्णन में मैंने किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं बरती प्रत्युत, सभी आचार्यों तथा रसिकों ने भक्ति मार्ग के सिद्धान्तों को सुगम तथा सुबोध

बना, भक्ति पथ के साधकों के लिए सामग्री परोस, मार्ग प्रशस्त कर दिया है, उन्हीं विचार-धाराओं को, उसी में सन्निहित भावानुभावों को, कुछ-कुछ विस्तार भरकर लीलाओं का समावेश करने की बाल-चापल्यवत् चेष्टा मेरी अवश्य रही है।

मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाइ।
तेहि मग चलत सुभग मोहि भाई॥
अति अपार जे सरित वर जो नृप सेतु कराहिं।
चढ़े पिपीलिकऊ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं॥

जिस प्रकार महत्जनों द्वारा बने पुल से पिपिलिका पर्यन्त सभी सहज ही पार उतर जाते हैं, इसी प्रकार रसिकों की अनुभूतियों का माध्यम ले यह मेरा प्रयास है।

यदि इस ग्रन्थ में कुछ भी रुचिकर दीखता हो तो उसका श्रेय मेरी परम पूजनीय बहन तथा गुरु भक्तिमती ऊषा बहन जी जिन्होंने मुझे चलना सिखलाया, बोलना सिखलाया, अपने वात्सल्य एवं स्नेह से सिंचित किया तथा जिनके रसीले वातावरण में पल, श्रीवृन्दावन आने का सहज योग बन गया, पूर्ण रूप से उन्हीं को है और जो भी त्रुटि दिखाई देती हो उसे मेरी अज्ञानता जान, पाठक मुझे क्षमा करेंगे।

ग्रन्थ परिचय

भक्ति पथ में सभी आचार्यों ने एक मत हो नाम को नामी से अभिन्न माना है। नाम के साथ-साथ लीला के चिन्तन को प्रधानता दी है। जिस प्रकार नामी, नाम से अभिन्न है उसी प्रकार लीला के यह युगल रस विग्रह प्रिया-प्रियतम तथा उन्हीं की कायव्यूह स्वरूपा यह ब्रज बालाऐं, लीलाओं में समाविष्ट हैं, ओत-प्रोत हैं। लीलायें, लीलास्थलियों से जुड़ी हैं और यह लीला-स्थलियाँ प्रिया-प्रियतम का दर्शन कराने में अभूतपूर्व योग देती हैं। वास्तव में लीला-स्थलियों का महत्त्व प्राणप्रेष्ठ श्यामसुन्दर, उनकी आह्लादिनी शक्ति श्रीराधा तथा निज-स्वरूप भूता इन ब्रज बालाओं को लेकर ही है और इन लीला-स्थलियों में वह सभी कुछ समाविष्ट है जिसे हम देख सकते हैं, आस्वादन कर सकते हैं तथा जो ग्राह्य है, वाञ्छित है, तथा अभीप्सित है, वही सब इन लीला स्थलियों की अनुकम्पा से अत्यन्त सुगम हो सहज ही प्राप्त हो जाता है।

उन्हीं लीलाओं से संयुत स्थलियों का विवरण इस ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय है।

प्रस्तुत ग्रन्थ, मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में ब्रज भूमि, ब्रज शब्द की व्युत्पत्ति, पौराणिक ब्रज, ब्रज की सीमा, परिक्रमा का

स्वरूप, लीला-स्थलियों का साधक के जीवन में योगदानादि का संक्षिप्त वर्णन है।

दूसरा भाग सात खण्डों में विभाजित है। सर्व प्रथम है 'मथुरा', जिसमें श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव तथा अन्य लीलाओं का वर्णन हुआ है। उस सबके बाद मथुरा के आस-पास की लीला स्थलियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

दूसरे खण्ड में श्रीकृष्ण का 'गोकुल' (महावन) पधारने का वर्णन है। श्रीनन्दरायजी के यहाँ वसुदेव नन्दन श्रीकृष्ण अपने ही दूसरे वपु नन्द नन्दन में लय हो ब्रज लीलाओं का आस्वादन करने लगते हैं, इन्हीं से सम्बद्ध श्रीकृष्ण चरित्र का इसमें वर्णन किया गया है। मुख्य रूप से यह स्थली पुष्टिमार्गीय वैष्णवों की सेव्य तीर्थ-स्थली है।

तीसरे खण्ड में श्री गिरिराज का प्राकट्य, भूलोक में अवतरण, ब्रज में आगमन, श्रीराधाकुण्ड तथा श्रीकृष्ण कुण्ड का प्राकट्य, श्रीचैतन्य महाप्रभुजी द्वारा प्रकाश तथा श्रीरघुनाथदास गोस्वामी द्वारा जीर्णोद्धार तथा श्री गिरिराजजी के अन्य तीर्थों का सविस्तार तथा सप्रमाण वर्णन किया गया है। आस-पास की अन्य स्थलियों का यथा-स्थान वर्णन हुआ है।

चतुर्थ खण्ड 'कामवन' है। श्रीकृष्ण प्राप्ति हेतु गोपिकाओं की कामनाओं की पूर्ति कराने वाली स्थली ही कामवन नाम से विख्यात है, श्रीकृष्ण के जहाँ सभी काम बनते है, वह कामबन कहा गया है।

पञ्चम खण्ड 'श्रीवृषभानपुर' है। ब्रह्माजी का प्रिया-प्रियतम की लीला माधुरी आस्वादन हेतु ब्रज में ब्रह्मगिरि रूप में विराजमान होना, बाल स्वरूपिणी श्रीराधा की बाल तथा किशोर लीलाओं का सरस वर्णन, तथा अन्य लीला स्थलियों का वर्णन सहित आस-पास अष्ट सखियों के ग्रामों का वर्णन, प्रेम सरोवर, संकेत आदि से सम्बन्धित लीलाओं का वर्णन किया गया है।

छठा खण्ड है अपना गाँव 'श्रीनन्दगाँव'। कंस के अत्याचारों से भीत हो, गोपों का वृन्दावन आगमन, उसके बाद भी मैया यशोदा को लाला की कुशलता की चिन्ता निरन्तर बनी रहना, वहाँ से किसी अन्य सुरक्षित स्थली (नन्दगाँव) चले चलने का विचार, श्रीकृष्ण की गोचारण लीला, समवयस्क सखाओं के साथ अन्य लीलाओं का तथा कभी-कभी सखाओं की प्रवंचना कर सखियों के मध्य श्यामसुन्दर का धूम मचा देना, अक्रूरजी तथा उद्धवजी का गोपिकाओं सहित वार्तालाप आदि का वर्णन है।

आस-पास गेंद खेलने की स्थली, यमुना तटवर्ती निकुञ्जों में गमन, कोकिला वन, चमेली वन आदि का वर्णन, भाण्डीर वन में श्रीराधाकृष्ण मिलन, ब्रह्माजी द्वारा विवाह आदि के प्रसंगों का सविस्तार विवरण दिया गया है।

इस ग्रन्थ का सातवां तथा अन्तिम खण्ड है 'श्रीवृन्दावन' धाम । प्रिया-प्रियतम की मधुर लीलाओं का स्थल श्रीवृन्दावन इस ग्रन्थ के प्राण हैं । कालिय मर्दन से प्रारम्भ कर चीर हरण, श्रृङ्गार वट, केशी मर्दन, धीर समीर घाट, वंशी वट पर रास लीला का वर्णन तो इस खण्ड में हुआ ही है, साथ-साथ अन्य रसिकों, स्वयं प्रकट ठाकुर स्वरूपों की लीलाओं का वर्णन भी इस खण्ड में किया गया है । सम्भवतः कुछ स्थलियाँ छूट भी गई होंगी, पुस्तक के कलेवर को साधन क्षमता की इयत्ता में सीमित रखने के कारण ही ऐसा हुआ है । पाठक गण इस सबके लिए क्षमा करेंगे ।

आभार प्रकाशन

इस ग्रन्थ के संकलन में अनेक ग्रन्थों की सहायता ली गई है । ग्रन्थों को जुटाना कितना कठिन होता है, जिन्हें इस प्रकार का सुअवसर प्राप्त हुआ होगा, वे पाठक अवश्य जान लेंगे, फिर भी श्रीहरिवल्लभजी शर्मा, जतीपुरा, श्रीहरि दास बाबाजी, श्रीराधाकुण्ड तथा श्री राकेश भाई, वृन्दावन ने यथा समय ग्रन्थ उपलब्ध करा मेरा कार्य हल्का किया है । मैं इनका अत्यन्त आभारी हूँ ।

अन्त में, मैं सभी आचार्यों, महानुभावों, रसिकों का हृदय से आभारी हूँ जिनके अमूल्य ग्रन्थों से, अनुभूतियों से, प्रेरणा ले तथा उनकी वाणी का आधार ले इस ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय लेखनी बद्ध हो सका है ।

मेरा दृष्टिकोण इस ग्रन्थ के प्रणयन में सभी सम्प्रदायों को समान आदर देते हुए, एक निष्पक्ष तथा प्रामाणिक स्थलियों का विवरण देने का रहा है । किसी भी सम्प्रदाय अथवा महानुभाव की गरिमा के सर्वथा अनुकूल ही वर्णन हो, ऐसा मेरा प्रयास रहा है, फिर भी यदि कहीं भूल से किसी की गरिमा के अनुकूल भाषा न बन पाई हो तो मुझे संकेत देकर, पाठकगण अनुग्रहीत करेंगे, इससे मुझे हर्ष होगा ।

विनय करूँ कर जोर, रसिक जनन के चरन में ।
'नारायण' चितडोर लगी रहे नित युगल पद ॥

भक्तिविजय

पुरोवाक्

स्नेहाच्च बहुमानाच्च स्मारये त्वां, न शिक्षये

कृष्णदत्त वाजपेयी
एफ.एन.आई.
१५, पद्माकर नगर
मकरोनिया, सागर (म.प्र.) ४७००४

दिनांक ११-८-१९९१

ब्रजभूमि के गौरव पर आधुनिक युग में अनेक पुस्तकें लिखी गयी हैं। "ब्रज भूमि मोहिनी" ग्रन्थ के रचयिता श्री विजय कौशल, ब्रज भूमि के प्रति समर्पित व्यक्ति हैं। उन्होंने यहाँ के धार्मिक तथा रससिक्त वातावरण की सम्यक् अनुभूति प्राप्त की है। प्रस्तुत ग्रंथ में उन्होंने बड़े ही श्रम से ब्रज के विभिन्न स्थलों का प्रामाणिक विवरण उपस्थित किया है।

लेखक श्रीविजय कौशल साधुवाद के पात्र हैं।

कृष्णदत्त वाजपेयी

ब्रज अथवा व्यापक अर्थ में माधुर्य रस से अनुस्यूत चौरासी कोस।

ब्रज स्वयंसिद्ध, प्रमाण की अपेक्षा से ऊपर एक सार्वभौम, सार्वकालिक समस्त भाव संवलित भूमि पर अवस्थित कर देने वाला आत्म दर्शन है- दूसरे शब्दों में ब्रज एक भावस्थिति है, एक आभ्यान्तरिक महायात्रा है जहाँ कोई पड़ाव नहीं।

प्रस्तुत ग्रन्थ से इन्हीं संदर्भों में ब्रज क्षेत्र की यात्रा का खण्डबद्ध विवाद और शास्त्रार्थ से परे एक वैयक्तिक प्रत्यक्ष और सहज सम्पर्कजन्य वर्णन किया गया है। ग्रन्थ की चर्चा पद्धति से स्वयं ही प्रमाणित हो जाता है-अति परिचित यह कथन-

ब्रज समुद्र मथुरा कमल, वृन्दावन मकरन्द।
ब्रज वनिता सब पुष्प हैं मधुकर गोकुलचन्द॥

बड़े हर्ष का विषय है कि लेखक समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त है। 'मैं कहता आँखिन देखी' पर उनकी अनन्य आस्था है, इसलिए वह स्थान-स्थान पर कई बार मन को छू जाता है। उन्होंने वर्षों से समस्त ब्रज की कई बार पदयात्रा की है और लम्बी-लम्बी अवधि तक कई स्थानों में निवास करके उसके मर्म

को पहचानने की अति सात्विक चेष्टा की है। ब्रज क्षेत्र के बहुत से अनजाने स्थान, कुण्ड, उद्यान या वन खण्ड एवं ग्रामों को उन्होंने बड़े सहज रूप में उल्लेखकर ग्रन्थ को संग्रहणीय बना दिया है। प्रत्येक स्थल का मूल नाम और वर्तमान तद्भव प्रचलित नाम, उसकी निरुक्ति, यह अत्यन्त स्तुत्य प्रयास ही कहा जायेगा जिसने बहुत बड़ी मात्रा में इसकी उपादेयता बढ़ा दी है। यह परिचय ग्रन्थ ही न रहकर कई दृष्टियों से संदर्भ ग्रन्थ भी हो गया है।

इस ग्रन्थ में लेखक का एकान्त परिश्रम तो है ही परन्तु उसके भावनात्मक हृदय की भी झाँकी जहाँ-जहाँ सुस्पष्ट देखने को मिल जाती है। अतएव उपासना दृष्टि से लेखन के विविध आयाम जिन विराट परिधियों को संस्पर्श करते हैं उसकी प्राञ्जलता पर 'वृन्दावनीय चिन्तन' की दृष्टि जानी चाहिये, यह समय की आवश्यकता है।

कृष्ण चैतन्य भट्ट

अध्यक्ष : हिन्दी विभाग, इंस्टीट्यूट आफ आरियण्टल फिलासफी, वृन्दावन
स्नान यात्रा ज्येष्ठ शुक्ला १५, २०४२ मि.

पूजनीय बाबा भक्ति विजय

'ब्रज भूमि मोहिनी' तथा 'ब्रज विभव की अपूर्व श्री भक्तिमती ऊषा बहन जी' के नाम से संत ऊषा बहन जी के जीवन चरित के प्रणेता पूजनीय बाबा भक्ति विजय का जन्म १९ दिसम्बर १९३८ को हुआ था।

परम पूजनीया ऊषा बहन जी के निर्देशनानुसार बाबा ने अधिकांश लीला स्थलियों पर रहकर तथा वहाँ रहने वाले सन्त, महात्माओं से सम्पर्क कर ब्रज भूमि मोहिनी के लिये सामग्री जुटाई। नन्द गाँव सदा ही उनका अपना गाँव रहा। नन्द गाँव के भोले निवासियों के साथ उनका विशेष स्नेह रहा। बहन जी के आदेश पर प्रथम पुस्तक के रूप में ब्रज भूमि मोहिनी का प्रणयन कर बाबा ने अपनी गुरु, माता एवं इष्ट ऊषा बहन जी और उनके ठाकुर जी को समर्पित कर दी। पूजनीया बहन जी के गोलोक गमन के बाद उन्होंने ब्रज निधि प्रकाशन के अन्तर्गत कई पुस्तकों का प्रणयन और प्रकाशन किया।

२४ मई २००८ को आप नित्य लीला में प्रवेश कर गये।

चित्र सूची

क्र.सं.	चित्र का नाम		पृष्ठ संख्या
1.	श्रीकृष्ण जन्म स्थान	मथुरा	I
2.	विश्राम घाट	मथुरा	II
3.	ब्रह्माण्ड घाट	गोकुल महावन	III
4.	संकर्षन कुण्ड	गोकुल-महावन	III
5.	चौरासी खम्भ	गोकुल-महावन	IV
6.	गोवर्द्धनगिरि	श्रीगिरिराज	V
7.	गोवर्द्धनगिरि	श्रीगिरिराज	V
8.	राधा कुण्ड	श्रीगिरिराज	VI
9.	श्याम कुण्ड	श्रीगिरिराज	VI
10.	कुसुम सरोवर	श्रीगिरिराज	VII
11.	मानसी गंगा	श्रीगिरिराज	VII
12.	श्रीकृष्ण चरण चिन्ह	कामवन	VIII
13.	व्योमासुर गुफा	कामवन	VIII
14.	नारद कुण्ड	कामवन	IX
15.	विमल कुण्ड	कामवन	IX
16.	श्री जी मन्दिर	श्रीवृषभानुपुर	X
17.	सांकरी खोर	श्रीवृषभानुपुर	X
18.	नन्दराय जी मन्दिर	श्रीनन्दगाँव	XI
19.	चरण पहाड़ी	श्रीनन्दगाँव	XII
20.	ललिता कुण्ड	श्रीनन्दगाँव	XII
21.	टेर कदम्ब	श्रीनन्दगाँव	XIII
22.	चीर कदम्ब	श्रीवृन्दावन	XIII
23.	श्री बाँके बिहारी	श्रीवृन्दावन	XIV
24.	निधि वन	श्रीवृन्दावन	XV
25.	इमली तला	श्रीवृन्दावन	XVI
26.	केशी घाट	श्रीवृन्दावन	XVI

श्रीकृष्ण जन्म स्थान, मथुरा पेज नं.: 24

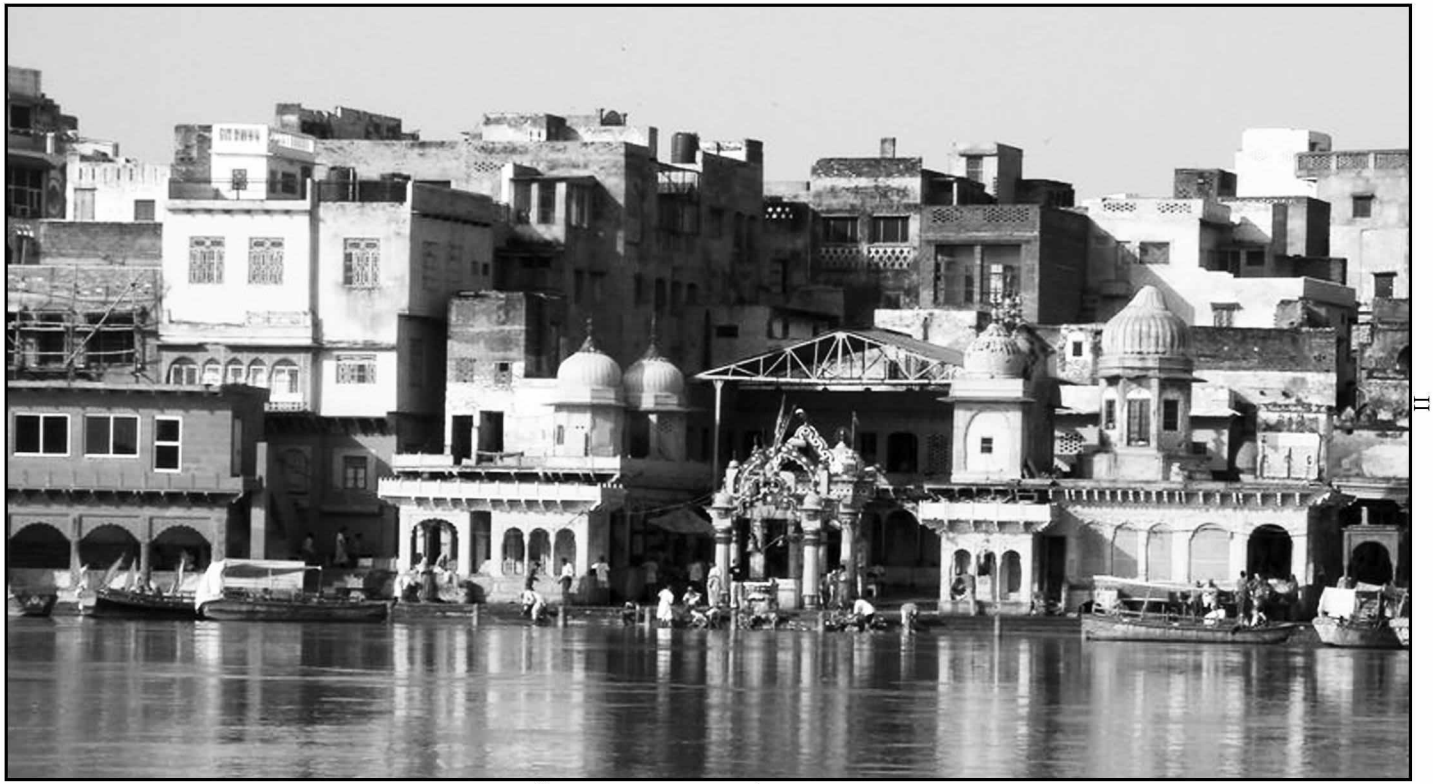

विश्राम घाट, मथुरा पेज नं.: 27

ब्रह्माण्ड घाट, गोकुल महावन पेज नं.: 65

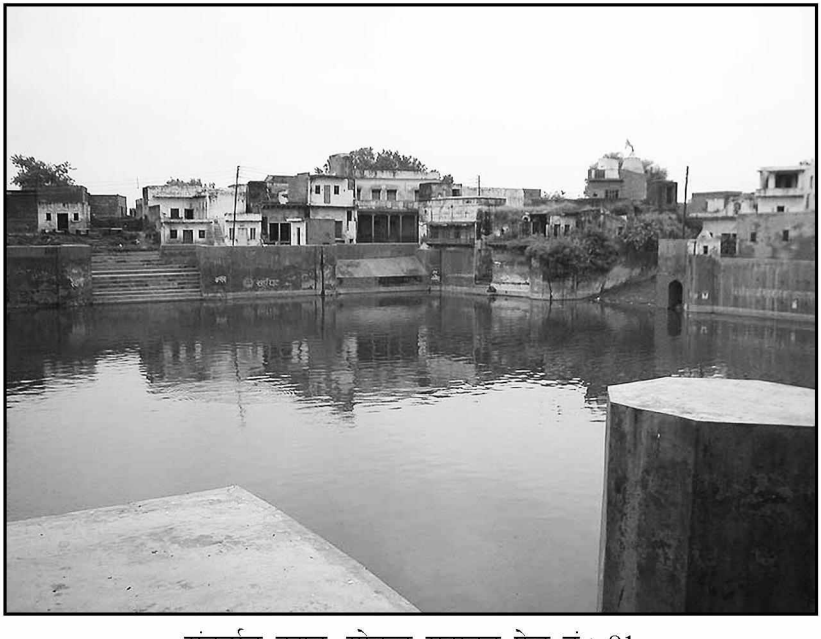

संकर्षन कुण्ड, गोकुल-महावन पेज नं.: 81

चौरासी खम्भ, गोकुल-महावन पेज नं.: 55

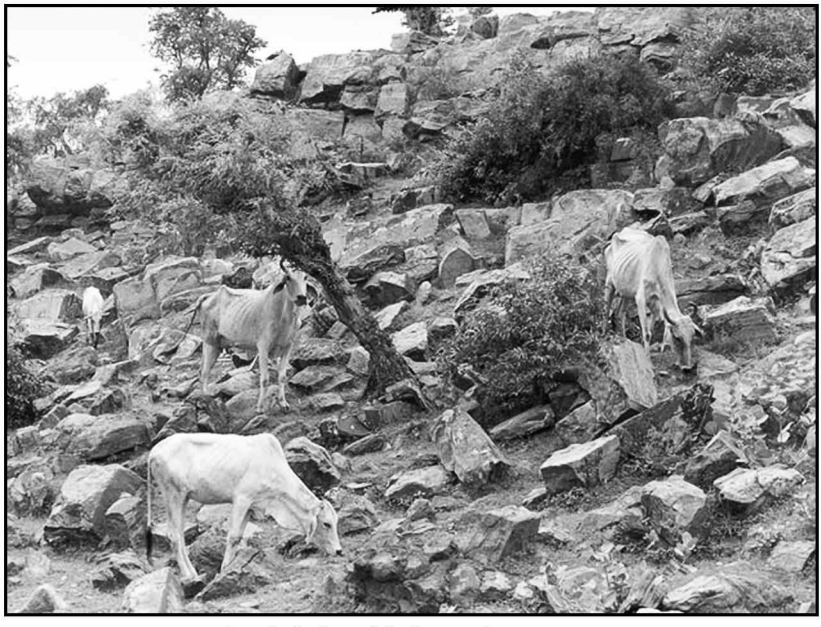

गोवर्द्धनगिरि, श्रीगिरिराज पेज नं.: 94

गोवर्द्धनगिरि, श्रीगिरिराज पेज नं.: 94

राधा कुण्ड, श्रीगिरिराज पेज नं.: 100

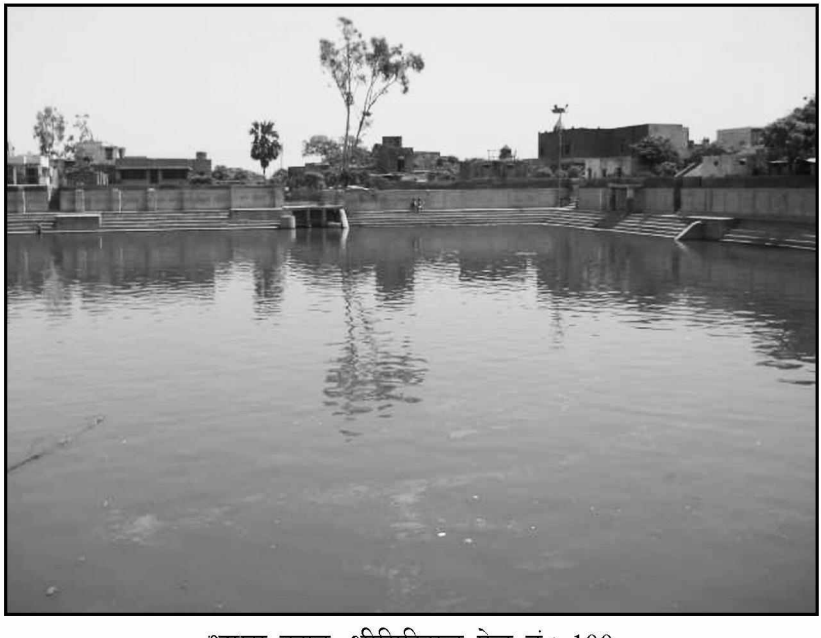

श्याम कुण्ड, श्रीगिरिराज पेज नं.: 100

कुसुम सरोवर, श्रीगिरिराज पेज नं.: 114

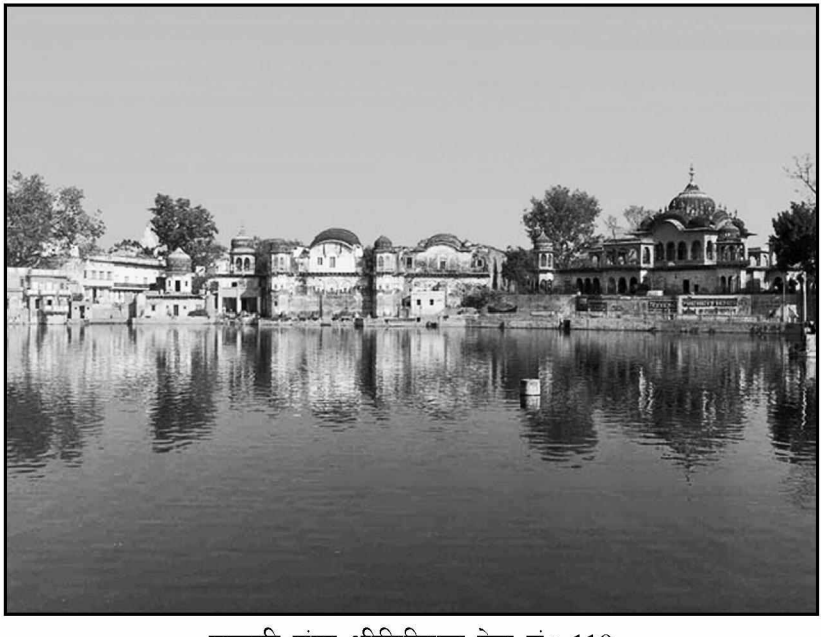

मानसी गंगा, श्रीगिरिराज पेज नं.: 119

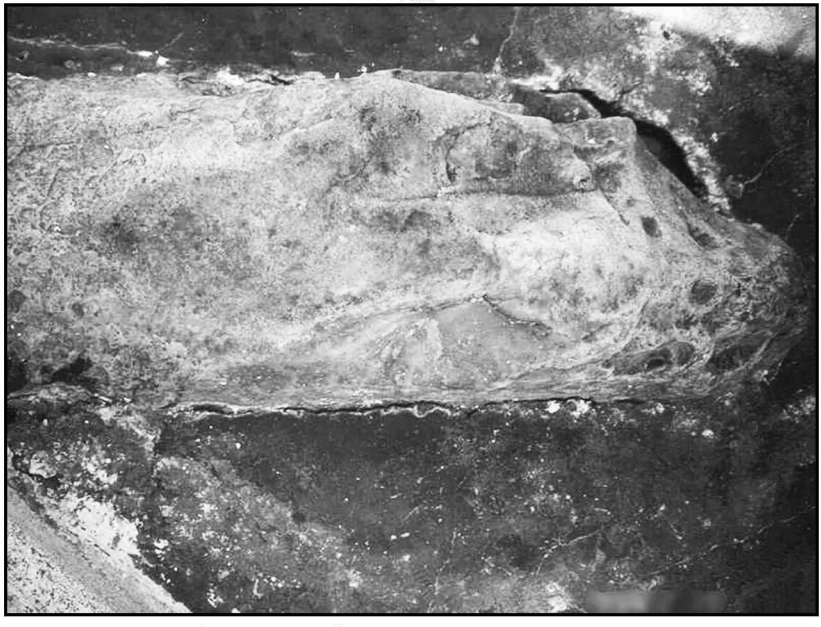

श्रीकृष्ण चरणचिन्ह, कामवन पेज नं.: 176

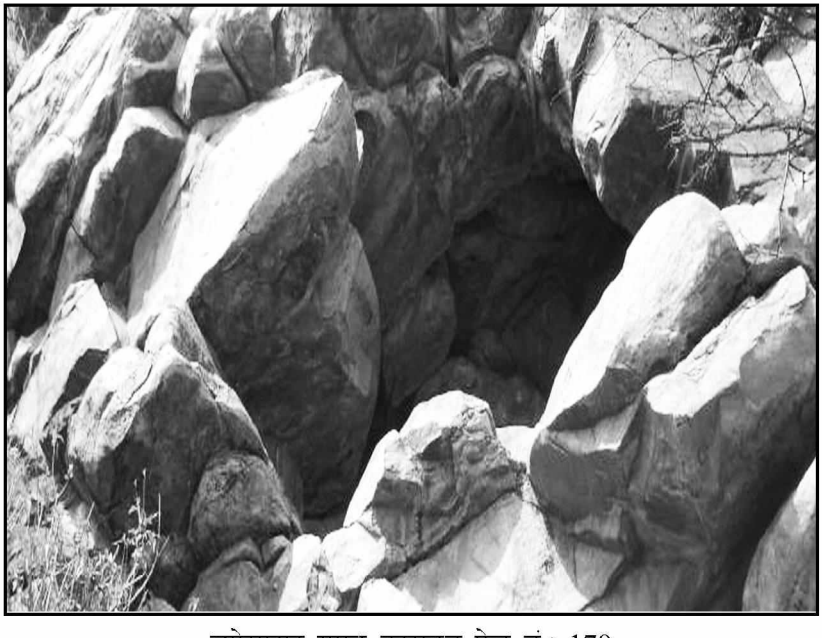

व्योमासुर गुफा, कामवन पेज नं.: 179

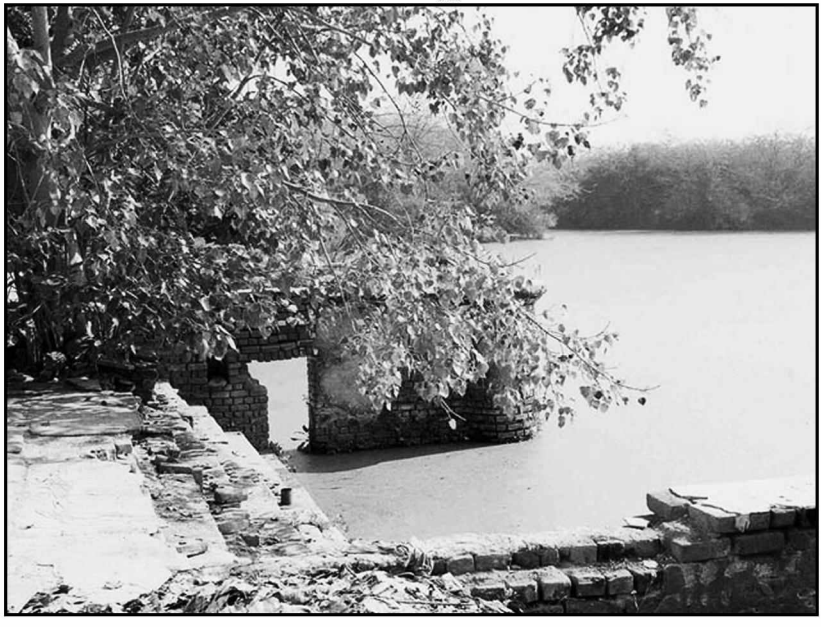

नारद कुण्ड, कामवन पेज नं.: 174

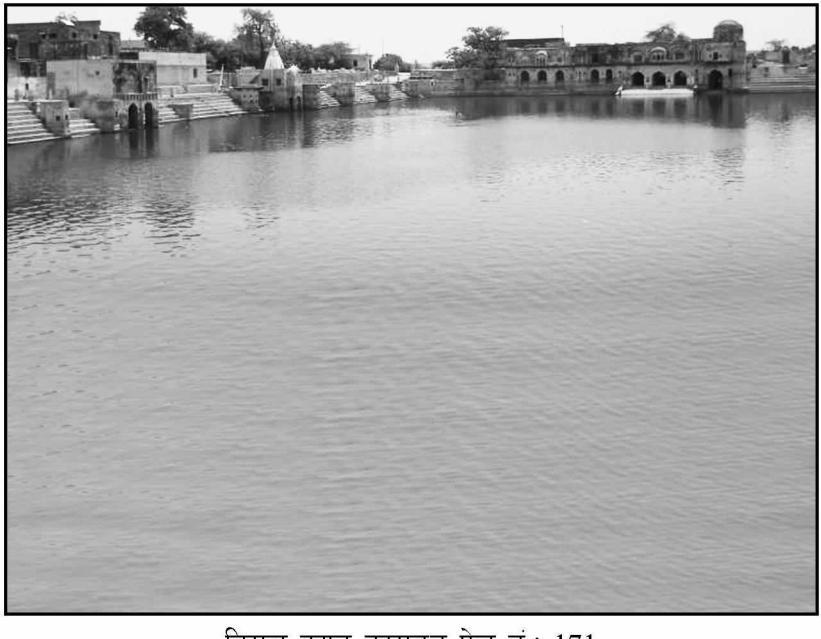

विमल कुण्ड, कामवन पेज नं.: 171

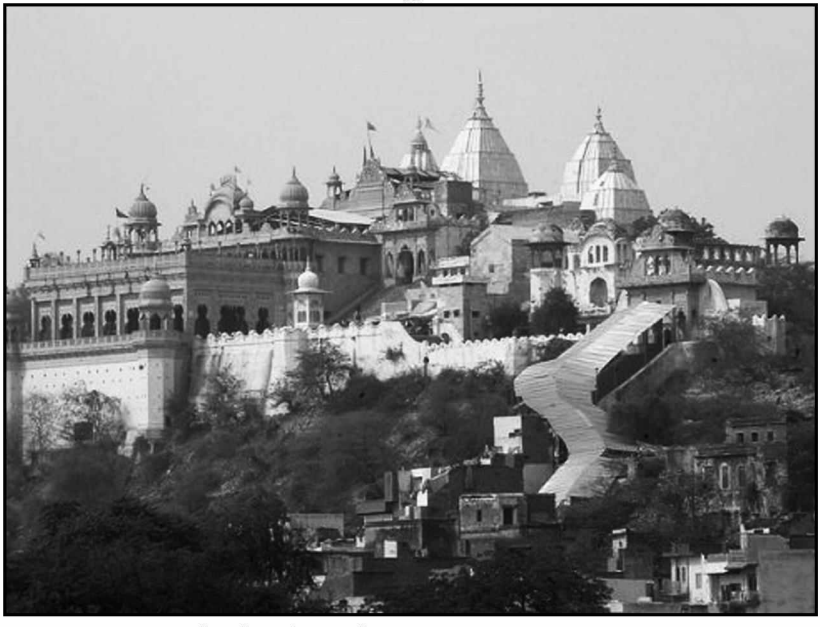

श्री जी मन्दिर, श्रीवृषभानुपुर पेज नं.: 191

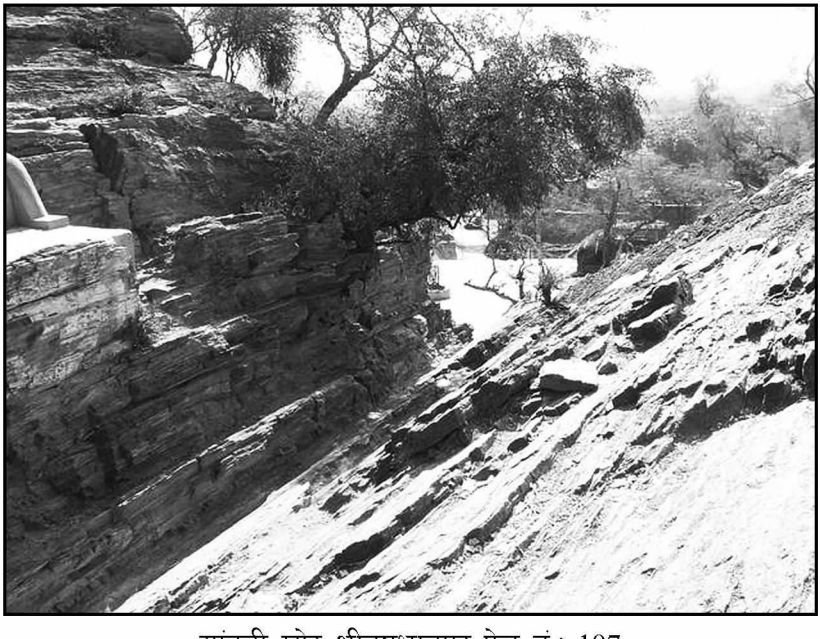

सांकरी खोर, श्रीवृषभानुपुर पेज नं.: 197

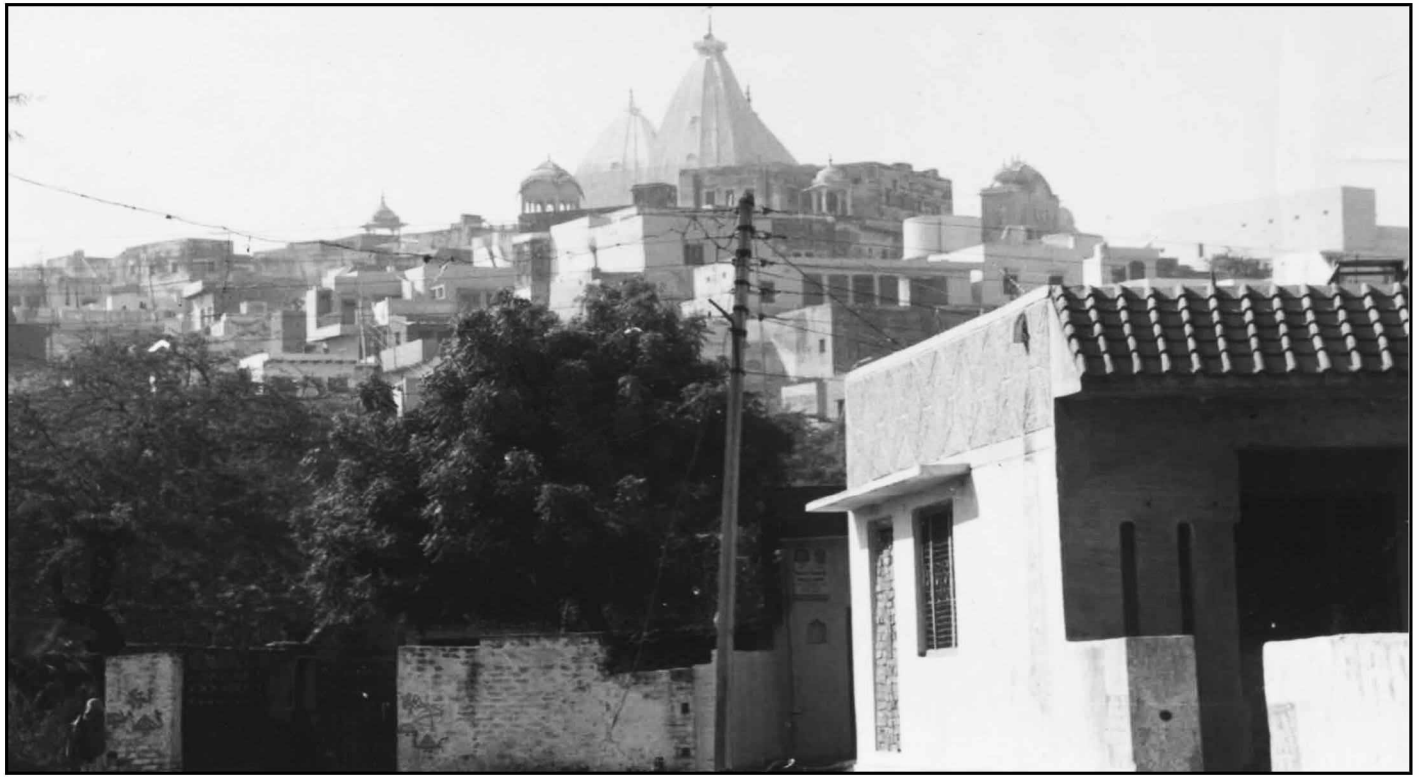

नन्दराय जी मन्दिर, श्रीनन्दगाँव पेज नं.: 231

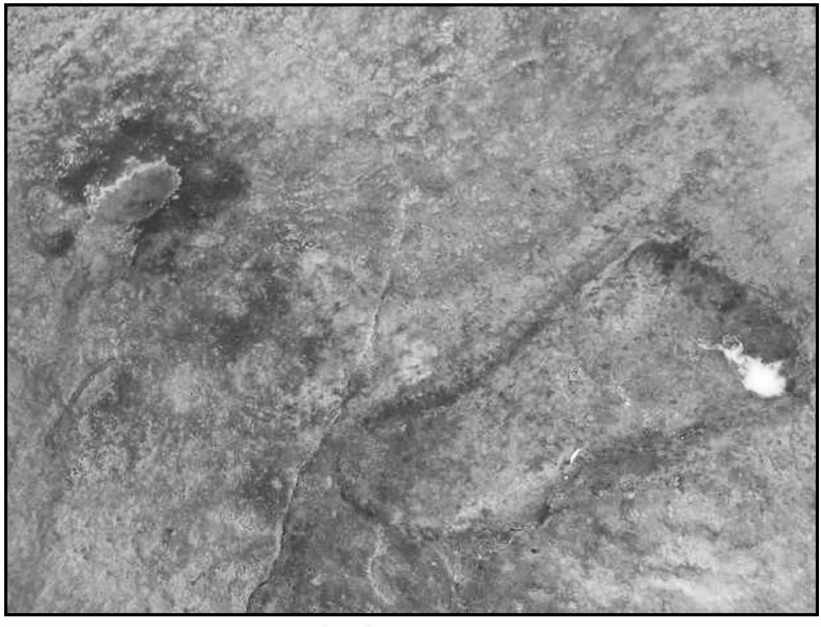

चरण पहाड़ी, श्रीनन्दगाँव पेज नं.: 272

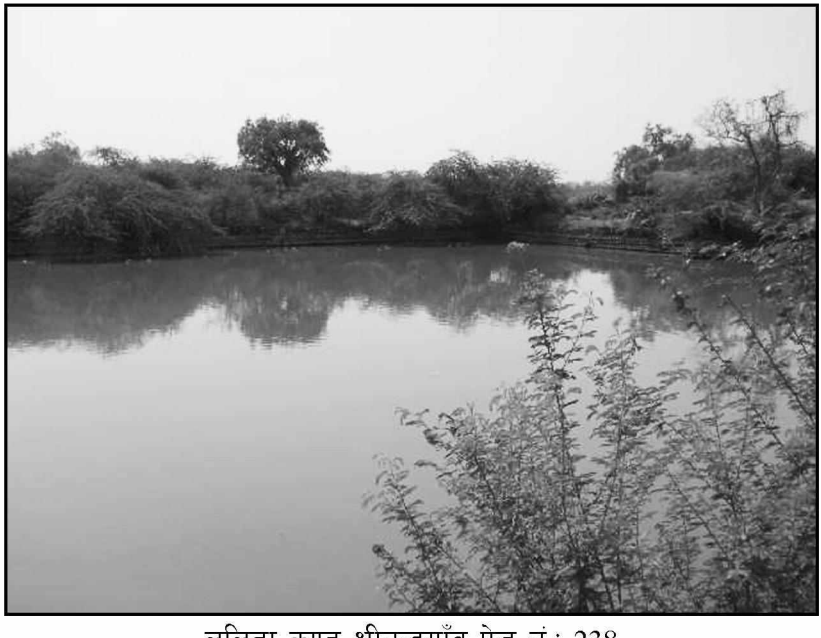

ललिता कुण्ड, श्रीनन्दगाँव पेज नं.: 238

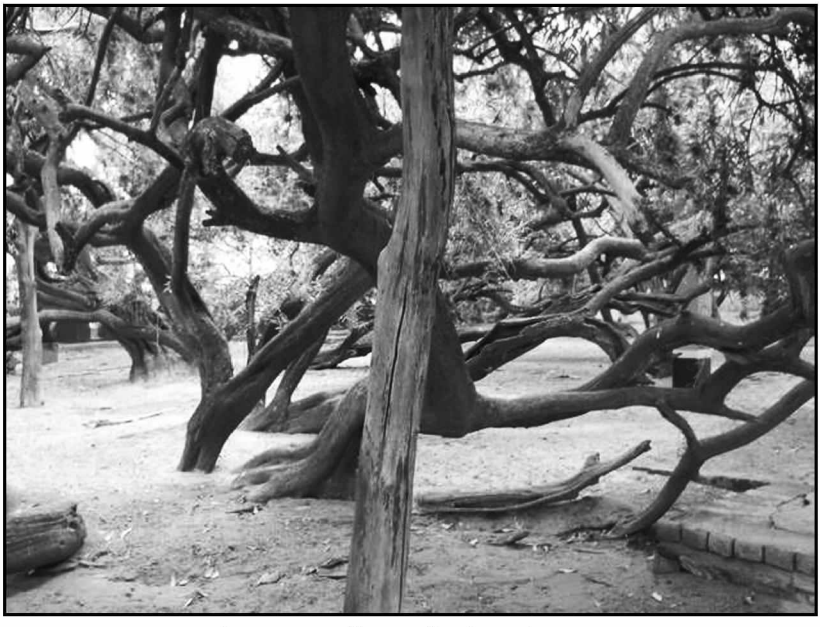

टेर कदम्ब, श्रीनन्दगाँव पेज नं.: 237

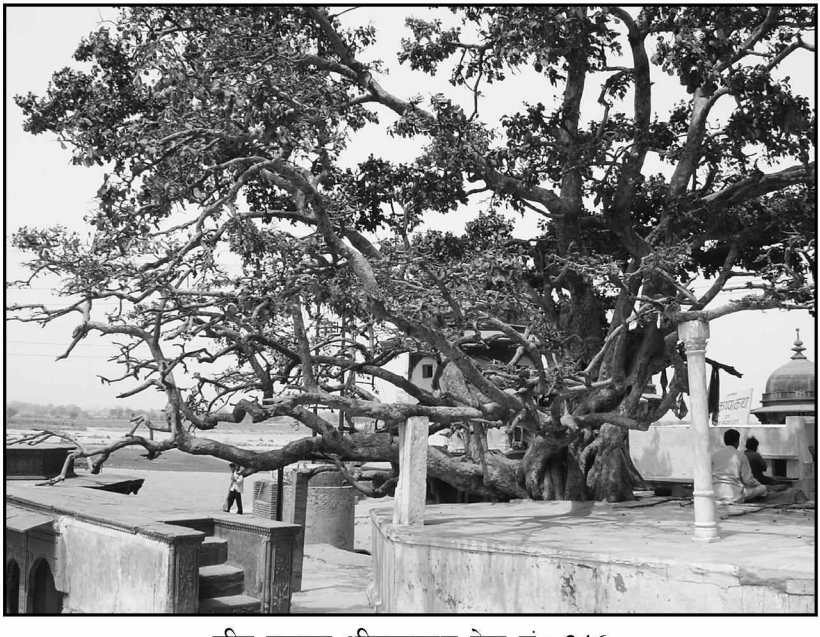

चीर कदम्ब, श्रीवृन्दावन पेज नं.: 346

श्री बाँके बिहारी, श्रीवृन्दावन पेज नं.: 332

निधि वन, श्रीवृन्दावन, पेज नं.: 352

इमली तला, श्रीवृन्दावन पेज नं.: 341

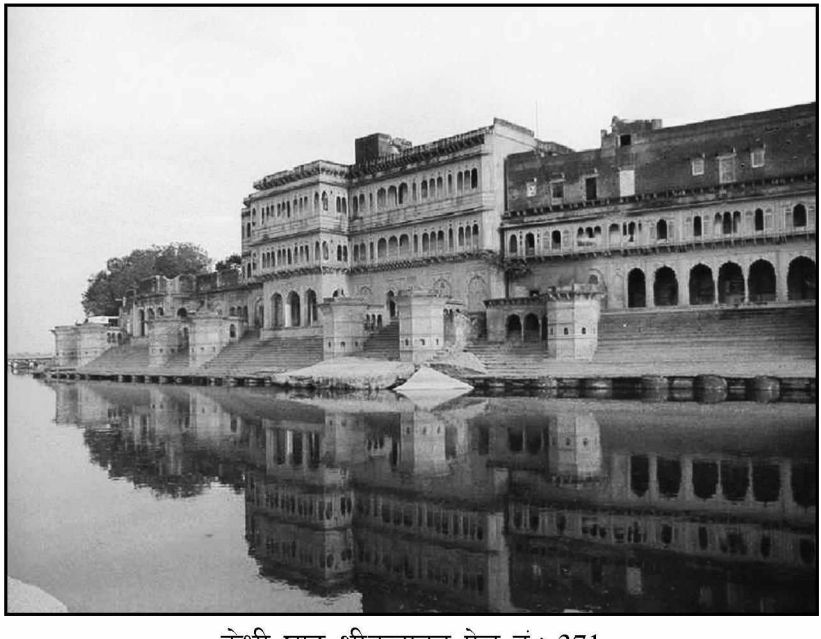

केशी घाट, श्रीवृन्दावन पेज नं.: 371

ब्रज वर्णन

पुण्या वत ब्रजभुवो यदयं नृलिङ्ग-
गूढः पुराणपुरुषो वनचित्रमाल्यः ।
गाः पालयन् सहबलः क्वणश्च वेणुं
विक्रीडयाञ्चति गिरित्ररमार्चिताऽघ्रिः ॥[1]

(श्रीमद्भागवत, 10/44/13)

"संकेतों तथा सन्देशों की स्थली का नाम ही ब्रज है ।"

मुरली ध्वनि के माध्यम से प्रियतम का रसीला संकेत ही ब्रज लीला का प्रारम्भ है । उस सन्देश को सुनती हैं ये ब्रजांगनायें ही । भिन्न-भिन्न संकेतों से उस सन्देश का स्वागत-सत्कार करती हैं, उन सन्देश प्रवाही की अभ्यर्चना कर सुख के अथाह सिन्धु में खो जाती हैं, मग्न हो जाती हैं । यह सन्देश, बंक विलोकन के पैने शरों के मिस प्रवहमान होते हैं, कभी घुँघराली कचलटों की बलखाती भ्रमरावली के मिस प्रवाहित होते हैं, कभी चारु मुख चन्द्र की स्निग्ध सुशीतल रश्मियों से प्रभावित होते हैं - यही नहीं, मुस्कान की अनगिन मधु रश्मियों से प्रवाहित हो इन ब्रजांगनाओं में प्राणों का संचार करते हैं - और फिर यह सन्देश और संकेत परस्पर मैत्री जोड़, ब्रजभूमि की सरसता में ओत-प्रोत हो जाते हैं, मग्न हो जाते हैं, मत्त हो जाते हैं - और इन्हीं रस कणों को संचित कर यह ब्रजभूमि धन्य हो जाती है, कृत-कृत्य हो जाती है ।

एक बार किन्हीं रसिक सन्त ने कहा था -

"न तो ब्रज जैसा धाम ही कहीं है और न इस धाम की सी धूम ही अन्यत्र सुलभ । इस धाम की धूम धाम में विश्व कोलाहल सुनाई नहीं पड़ता । श्रवणों में रव भरा रहता है पर वह विषय-रव नहीं है, वह है प्रकृति के खुले प्रांगण में पक्षियों का कलरव । कल, कल, निनादित कालिन्दी का मधुर मृदुल रव, घाटों पर, पनघट पर हँसती खिलखिलाती ब्रज किशोरियों के मुखर नूपुरों का सरसीला रव । प्रिय चर्चा में सिक्त उनके हास परिहास का मदिर रव, ग्वाल गोष्ठी की

---

1. सखी ! सच पूछो तो, ब्रज भूमि ही परम पवित्र और धन्य है, क्योंकि यहाँ ये पुरुषोत्तम मनुष्य के वेश में छिपकर रहते हैं । स्वयं भगवान शंकर और लक्ष्मी जी, जिनके चरणों की पूजा करती हैं, वे ही प्रभु यहाँ रंग बिरंगे वन्य पुष्पों की माला धारण किये बलराम जी के साथ वंशी बजाते, गउऐं चराते भाँति-भाँति के खेलों में मग्न, आनन्द से विचरण करते हैं ।

चपल क्रीड़ाओं में थिरकता बालोचित केलि रव । सखाओं में घिरे ब्रजराज कुंवर की मादक खिल-खिलाहट का सरस रव । यमुना कूल वर्ती कदम्ब कानन के किसी तरु तले खड़े ब्रजराज किशोर की मधुरासव सिञ्चित मुरलिका का मनहर रव । उस मधुर मुखर निनाद से खिंच भागकर आती हुई विवश परवश गोप किशोरियों के कङ्कण, किङ्किणियों एवं चरण मञ्जीरों का कलित रव, और यह सब रव जिसकी रसीली भूमिका है, वह रस विलास..... जनित मदाम्बुधि में उछलती रस बीचियों का मन्द मधुर रव..... "

यही नहीं "ब्रज की सुभग रमणीय निकुञ्जों का परम सौभाग्य, अनिर्वचनीय है । प्रत्येक रज कण किसी नव लीला का परिचायक है । यहाँ के वृक्ष वल्लरियाँ, आज भी उसी मस्ती में भरे झूम रहे हैं । लीला विहार यहाँ नित्य एवं शाश्वत है । आज भी, उसी प्रकार अबाध गति से लीला विहार, हास-विलास, रस-रास ब्रज बीथियों, निकुञ्ज-उपवनों में थिरक रहा है । उसे समेटने सहेजने के लिए तत्परता का अभाव है । रसिक जन आज भी उन लीलाओं का आस्वादन कर रहे हैं ।"

भक्तिमती ऊषा बहन जी के जीवन में ब्रज विभव के रस बावरे प्रिया-प्रियतम की इच्छा से एक ऐसे दिव्य तथा अलौकिक घटनाक्रम का सूत्रपात हुआ था जो ब्रज श्री की सम्पन्नता में विलक्षणता को लेकर प्रकट हुआ । श्यामा श्याम ने अपने ही निज परिकर की एक सखी को बहन जी की सन्निधि में वर्तमान में हो रही चिन्मय लीलाओं को समय-समय पर सुलभ कराने/दर्शाने का हेतु लेकर भेजा । उन्हीं दिव्य लीलाओं की दिव्य अभिव्यक्ति के कुछ सरस चित्र मैं पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर एक ऐसे वातावरण से परिचित कराना चाहता हूँ जो आज के युग में असम्भव ही कहे जा सकते हैं ।

एक

"सखि ! तू तो कहती थी कल के रस विभव को समेटे बौराये हिंडोले, आज भी हमारी प्रतीक्षा में रत हैं, लता-विटप हमारे आगमन की बाट जोह रहे हैं । घन-दामिनी हमारा पथ निहार रहे हैं पर वे सुजान शिरोमणि तो अभी तक भी आए नहीं । देख घन गरज रहे हैं, दामिनी लरज रही है, केकी समूह नृत्य निरत हैं, वृक्ष और वल्लरियाँ आनन्दोन्माद में भर झूम रहे हैं । .....प्रिय प्रतीक्षातुरा किशोरी राधिका ने पास खड़ी ललिता के स्कन्ध पर कर कमल धर कहा ।"

दूसरा

"वर्षा में नहाये वृक्षों ने झूम-झूम कर लतिकाओं को झकझोर दिया । उन झूम झकोरों से दोलित वृक्ष वल्लरियों की मस्ती भरी इठलान ने ब्रज

किशोरिकाओं के अन्तर में मधुर मदिर आलोड़न भर दी। प्रकृति की इस सज्जा में प्रियतम से मिलन की प्रबल प्रेरणा पा वे चंचल हो उठीं। प्रियतम के अन्तर की हलचल, उनके अंग प्रत्यंग में चपलता बन उन्हें रह-रहकर उकसा रही थी और प्रियाजी के हृदय की मधुरिम खलबली उनके अंग-सुअंग को पुनः पुनः किसी सबल सिहरन से भर रोमांचित कर रही थी। प्रसून भवन के गवाक्ष से झाँक उन्होंने भोर के श्यामल उजाले को देखा, फिर परस्पर दृष्टि विनिमय कर .....।"

एक अन्य

"विचित्र चित्रांकन किया आज रसिक शेखर ने। रस मज्जिता किशोरी के स्निग्ध भाल पर, मृदुल कपोलों पर..., कोहिनी से ऊपर गोल गोल सुडौल भुजाओं पर ...। निशि विलास के रस-रंग भरे प्रणयांक उस पुष्प पल्लव रचना में छिप गए। ...प्रियाजी न जाने किस भावमयता में डूबीं, किन मदिर-मधुर भावनाओं में भरी, किन चपल अटखेलियों से सकुचायी सी कमल-दल नयन मूंदे एक विशाल विटप का सहारा लिये, चरण पर चरण धरे निश्चेष्ट-सी बैठी थीं...और ...।"

एक अन्य

"वातायन से शीतल समीर का एक झोंका फिर भीतर आया। उसने उष्णता लाभ हेतु युगल-रस बावरों को और और.....सुअंग-सम्मिलन की उस रंगीली रेला-पेली में...खोए-खोये-से वे.....मदमत्त युगल....। मदाब्धि की गहराई में उतर और-और धँसते वे युगल रस रंगी.....एक दूसरे को क्या पता कैसे-कैसे उबार रहे थे, संभार रहे थे। उस समय की मत्तता का वह विलास ओह !"

हाँ तो प्रिया प्रियतम की लीलाओं से सम्पन्न है यह ब्रज भुवि।

'ब्रज' शब्द का अर्थ व्यापकत्व से है-

गुणातीतं परं ब्रह्म व्यापकं ब्रज उच्यते।
सदानन्दं परं ज्योति मुक्तानां पदव्ययम्॥

(स्क० पु०)

सत्व, रज, तम, इन तीनों गुणों से अतीत जो परब्रह्म है, वही व्यापक है। उसे ही 'ब्रज' कहते हैं। यह सच्चिदानन्द स्वरूप, परम ज्योतिर्मय और अविनाशी है तथा जीवन्मुक्त पुरुष ही इसमें निवास करते हैं।

परम ब्रह्म स्वरूप ब्रज धाम, श्रीकृष्ण की नित्य निवास-स्थली है। वे आत्माराम तथा आप्त काम हैं, वे सच्चिदानन्दमय हैं तथा भक्तों के लिए यहाँ सहज ही सुलभ हो जाते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति हैं श्रीराधा। रमण करने की इच्छा से ही श्रीकृष्ण ने अपने वाम पार्श्व से इन्हें प्रकट किया है। इन अखण्ड लावण्य माधुर्य तथा प्रेम की साक्षात मूर्ति श्रीराधा के साथ रमण करने के कारण ही श्यामसुन्दर आत्माराम कहलाते हैं। काम शब्द अभिलाषा को ध्वनित करता है। श्रीकृष्ण के वाँछित पदार्थ हैं, गौऐं, ग्वाल बाल, गोपिकाएँ तथा उनके साथ लीला विहार। वे सबके सब, ब्रज में नित्य तथा सदैव प्राप्त हैं, इसीसे नन्द नन्दन श्रीकृष्ण आप्तकाम कहलाते हैं।

भगवान की लीला में स्थूल प्रकृति का प्रवेश नहीं है। श्रीकृष्ण की लीला दिव्य है तथा वे स्वयं ही अपने जनों पर कृपा कर, उसका आस्वादन कराते हैं। यह लीला 'नित्य' तथा 'प्रकट' नाम से दो भेदों में अलग-अलग दर्शायी गई है। नित्य लीला उन्हीं के निज परिकर से सम्बन्धित होने के कारण भगवान के तथा रसिक जनों के लिए ही सुलभ तथा आस्वादनीय है और जो लीला सभी जीवों के सामने होती है वह 'प्रकट' लीला है। 'प्रकट' लीला तथा 'नित्य लीला' के परिकर एक ही होने के कारण नित्य तथा प्रकट लीला अलग-अलग भासने पर भी स्वरूपतः तथा सिद्धान्ततः छाया प्रति छाया सी एक ही हैं।

मथुरा के आस-पास की स्थली को ब्रज की संज्ञा दी गई है। वहीं भगवान की नित्य लीला, सदैव गतिमान रहती है। प्रेमिल तथा रसिक हृदय उसका आस्वादन करते हैं, कर रहे हैं। अट्ठाईसवें द्वापर के अन्त में जब भगवान की नित्य तथा रहस्य लीला के अधिकारी यहाँ एकत्रित होते हैं, उस समय भगवान अपने अन्तरंग प्रेमियों सहित ब्रज में अवतार लेकर अपने निज तथा अन्तरंग जनों को मधुर लीलाओं का आस्वादन करा, रस प्रदान करते हैं। भगवान अपने अखण्ड आनन्दमय स्वरूप में विराजमान रहते हुए भी, अपनी ऐश्वर्य सत्ता से ही सृजन तथा संहार सहज कर सकते हैं, परन्तु उनके अवतार लेने का मुख्य हेतु अपने जनों को मधुर रस में सराबोर करना रहता है।

भगवान की तीन शक्तियाँ मानी गई हैं। आह्लादिनी, संधिनी तथा संवित्। वृन्दावन तथा ब्रज उनकी संधिनी शक्ति का विलास है।

'वृन्दावन', ब्रज की मुख्य स्थली है। कहीं कहीं ब्रज को वृन्दावन भी कहा गया है। यहाँ यमुना का सुरम्य तट, गोवर्द्धन की रमणीय तलहटी तथा चौरासी कोस भूमि आज भी भौतिक चक्षुओं के लिए गोचर है।

वेदों में भी ब्रज शब्द का प्रयोग हुआ है।

'व्रजन्ति गावो यस्मिन्नति व्रजः' अर्थात् जिस स्थान पर गाय चलती हैं अथवा चरती हैं उसे ब्रज कहते हैं।

हरिवंश पुराण में ब्रज शब्द का प्रयोग मथुरा के आस पास की स्थली के

लिए हुआ है। वह स्थली आज 'गोकुल' नाम से विख्यात है।

श्रीमद्भागवत में 'गोकुल', 'ब्रज', 'गोष्ठ' तथा 'नन्दग्राम' का प्रयोग लगभग एक ही स्थली, जहाँ गउऐं रहती है तथा श्रीनन्दरायजी की जो निवास स्थली है, के लिए किया गया है।

गर्ग संहिता में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने अवतार की बात जब श्री राधा से कही तो 'जहाँ श्रीयमुना नहीं है, श्रीगिरिराज तथा श्रीवृन्दावन नहीं है वहाँ मेरे मन को सुख नहीं होगा', श्रीराधा के कहने पर, भगवान ने

वेद नाग क्रोश भूमि स्वधाम्नः श्रीहरिः स्वयम्।
गोवर्द्धनं च यमुनां, प्रेषयामास भू परि ॥

(गर्ग सं० 2/3/24)

'ब्रज' के लिए पुराणों में भी 'मथुरा मण्डल' अथवा 'ब्रज मण्डल' का ही अधिक प्रयोग हुआ है।

अष्टछाप काव्य में ब्रज शब्द 'गोचारण' 'गोपालन' तथा गो, ग्वालों के विहार स्थल के रूप में प्रयुक्त हुआ है। अष्टछाप में श्रीअक्रूरजी तथा उद्धवजी को मथुरा का होने के कारण 'मधुवनियाँ' (मधुवन का निवासी) मान ब्रज भाव को मथुरा से अलग ही रखा है।

'ब्रज' का आधुनिक स्वरूप पन्द्रहवीं शताब्दि में ही सुनिश्चित हो सका तथा अद्यावधि चौरासी कोस भूमि जो मथुरा नगर के चारों ओर है तथा श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित है वही ब्रज नाम से कही जाती चली आ रही है।

श्रीश्रीभट्टजी महाराज ने ब्रज भूमि को मोहिनी कह अपनी भावना व्यक्त की है-

ब्रज भूमि मोहिनी मैं जानी।
मोहिनी कुञ्ज, मोहन श्रीवृन्दावन मोहन जमना पानी॥
मोहिनी नारि सकल गोकुल की बोलति मोहनि बानी।
'श्री भट्ट' के प्रभु मोहन नागर मोहिनी राधा रानी॥

श्रीहरिव्यास देवाचार्य जी महाराज ने-

"यही है, यही है, भूलि भरमो न कोउ,
भूलि भरमे ते भव भटकि मरिहौ॥

(सि० सु०)

तथा

'श्रीहरिप्रिया प्रकट पुहुमी पर कहत होत होत मति पंग'

(उ० सु०)

कहकर वृन्दावन तथा ब्रज के महत्त्व को स्वीकार किया है।

इधर वल्लभ सम्प्रदाय में श्रीविट्ठलेश प्रभु ने ब्रजभूमि की वन्दना करते हुए कहा-

'मंगलं मंगलं ब्रज भुवि मंगलं'

और यह ब्रजभूमि कैसी हैं- जहाँ श्रीनन्दरायजी तथा मैया यशोदा के सुख का वर्द्धन कर रहे हैं नन्दनन्दन, ब्रज सुन्दरियों के साथ प्रेम की पराकाष्ठा का दर्शन हो रहा है, रास रस प्रवहमान है, यह ब्रजभूमि, मंगलमय है, प्रणम्य है ।

ब्रज भूमि की सरसता से अनुप्राणित श्रीवृन्दावन रस निमग्ना भक्तिमती ऊषा बहनजी के नेत्रों के सम्मुख नील-पीत मधुरिमा कालिन्दी तट पर रसोन्माद में भरी प्रकट हो गई और.....

सुरभित शीतल श्यामला कालिन्दी के कूल ।
श्रीवन कुञ्ज-निकुञ्ज मँह विहँसि रहे दो फूल ॥
विचरहिं कुञ्ज-निकुञ्ज में किये नवल श्रृंगार ।
सखिजन मण्डित युगलवर, करहिं वसन्त विहार ॥
कबहुँ करहिं परिहास कछु, कबहुँ करहिं कल गान ।
कबहुँ पुष्प बरसावहीं, प्रणय विदग्ध सुजान ॥

आज भी ब्रजभूमि की इन कुञ्ज-निकुञ्जों में विचरणशील, विहार रत प्रिया-प्रियतम निज जनों की भावनाओं को सरसा रहे हैं ।

श्रीरूप गोस्वामी पाद ने लघुभागवतामृत में श्रीकृष्ण के चार धामों का वर्णन किया है । वहाँ 'गोकुल' तथा 'श्रीवृन्दावन' ब्रज के ही नामान्तर दर्शाये हैं । श्रीश्रीजीवगोस्वामीपाद ने 'श्रीवृन्दावन', 'गोकुल' तथा 'ब्रज' को एक ही धाम का पर्यायवाची कहा है ।

श्रीश्रीचैतन्य चरितामृत में कह रहे हैं-

सर्वोपरि श्रीगोकुल, ब्रज लोक धाम ।
श्रीगोलोक, श्वेत-द्वीप, वृन्दावन नाम ॥

अतः 'गोकुल', 'ब्रज', 'गोलोक' तथा 'वृन्दावन' को पर्यायवाची माना है ।

श्रीकृष्ण की वृन्दावन तथा उसके आस-पास की स्थलियों से सम्बन्धित लीला क्षेत्र (मथुरा के अतिरिक्त) को 'ब्रज' नाम से सभी महानुभावों ने स्वीकार किया है ।

ब्रज की सीमा तथा भौगोलिक स्वरूप

इत बरहद इत सोनहद, उत सूरसेन को गांव ।
ब्रज चौरासी कोस है, मथुरा मण्डल मांह ॥

उक्त दोहे से स्पष्ट है कि ब्रज की सीमा का स्वरूप एक ओर 'बर' स्थान दूसरी ओर सोनहद, तथा तीसरी ओर, शूरसेन का गांव बटेश्वर माना गया है । इसी दोहे का विवरण श्रीग्राऊस महोदय ने अपनी पुस्तक 'मथुरा मैमोअर' में दिया है । इससे स्पष्ट है कि अलीगढ़ जिले का 'वर' स्थान, गुड़गांव जिले का (सौंद) सोनहद तथा शूरसेन का ग्राम बाह तहसील का बटेश्वर नामक गांव है । इन्हीं स्थलियों के मध्य की स्थली को ब्रज कहा गया है ।

ब्रह्माण्ड पुराण के श्लोकों के आधार पर पूर्व में हास्यवन, दक्षिण में जन्हुवन तथा पश्चिम में पर्वतवन तथा उत्तर भाग में सूर्यपतनवन माना गया है ।[1]

अत: पूर्व में आगरे जिले का हसनगढ़ हास्यवन के नाम से, पश्चिम में राजस्थान का कामवन के पास का पहाड़ी ग्राम, पर्वतवन के नाम से तथा दक्षिण में धौलपुर तहसील का जाजऊ ग्राम जन्हुवन नाम से विख्यात है । उत्तर भाग में अलीगढ़ जिले का जेवर ग्राम के निकट सूर्यपतनवन की स्थिति मानी गई है ।

अनेक विद्वानों ने ब्रज मण्डल को 'प्रकार' की भाँति गोले के समान दिखला कर ही अपने मत को स्पष्ट किया है, परन्तु 'ब्रज मण्डल' शब्द के आधार पर गोलाकार माना जाना तो स्वाभाविक ही है, साथ साथ इस गोलाई का स्वरूप 'प्रकार' की भाँति गोल होना कुछ स्वाभाविक सा नहीं लगता ।

पुष्टिमार्ग के प्रसिद्ध कवि तथा भक्त प्रवर सूरदासजी ने सूर सारावलि नामक ग्रन्थ में ब्रज की सीमा का विस्तार चौरासी कोस मान निम्न पद कहा है-

---

1. चतुर्दिक्षु प्रमाणेन पूर्वादिक्रमतोगणत् ।
पूर्वभागे स्थितं कोणं वनं हास्यभिधानकं ॥
भागे च दक्षिणे कोणं शुभं जन्हुवनं स्थितं ।
भागे च पश्चिमे कोणे पर्वताख्यवनं स्थितं ॥
भागे हचुत्तरकोणस्यं सूर्य पतन संज्ञकं ।
इत्येता ब्रज मर्यादा चतुष्कोणाभिधायिनी ॥

यहि विधि क्रीड़त गोकुल में हरि निज वृन्दावन धाम ।
मधुवन और कुमुद वन सुन्दर बहुला वन अभिराम ॥
नन्दगाँव, संकेत, खिदिरवन, और कामवन धाम ।
लोहवन, मांट, बेलवन, सुन्दर भद्रवृहद्वन गाम ॥
चौरासी ब्रज कोस निरन्तर खेलत हैं बल मोहन ।
सामवेद, ऋग्वेद, यजुर में कहेउ चरित ब्रज मोहन ॥

गर्ग संहिता में गोकुल से वृन्दावन प्रस्थान करते समय श्रीनन्दरायजी के प्रश्न के उत्तर में सन्नन्दजी ने कहा-

प्रागुदीच्यां बहिर्षदो दक्षिणस्यां यदोः पुरात् ।
पश्चिमायां शोणितपुरान्माथुरं मण्डलं विदुः ॥

(ग० सं० खं० 2)

वर्हिषद् (बरहद) से पूर्वोतर, यदुपुर (शूरसेन के गांव बटेश्वर) से दक्षिण और शोणितपुर (सोनहद) से पश्चिम में चौरासी कोस भूमि को विद्वज्जनों ने ' माथुर मण्डल' और 'ब्रज' कहा है ।

अतः सभी ने ब्रज की सीमा वर, बटेश्वर तथा सोनहद (सौंद) के भीतर की स्थली स्वीकार की है ।

ब्रज की परिक्रमा

ब्रज की यात्रा का क्रम हमारे धर्म ग्रन्थों में बहुत पहले से ही चला आ रहा है । अक्रूरजी तथा उद्धवजी ब्रज में पधारे । श्रीबलरामजी महाराज का ब्रज आगमन तथा विहार भी प्रसिद्ध है । परन्तु लीला स्थलियों के प्राकट्य हेतु श्रीशाण्डिल्य महर्षि के सहयोग से वज्रनाभजी का ब्रज भ्रमण महत्त्वपूर्ण है ।

पन्द्रहवीं शताब्दी में ब्रज परिक्रमा का स्वरूप निश्चित सा हुआ दीखता है । उन्हीं दिनों श्रीवल्लभाचार्यजी महाराज, श्रीमाधवेन्द्रपुरी जी महाराज तथा श्रीचतुरा नागाजी द्वारा ब्रज भ्रमण के प्रसंग मिलते हैं । इनके साथ साथ ही लोकनाथ गोस्वामी, भूगर्भ गोस्वामी तथा श्रीश्रीचैतन्य महाप्रभुजी, श्रीगोस्वामी विट्ठलनाथजी महाराज, स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज, तथा श्रीहित हरिवंशजी महाराज द्वारा ब्रज की स्थलियों में भ्रमण तथा स्थलियों का उद्धार इतिहास में मणि तथा सूत्र की भाँति जुड़ा है ।

ब्रज में परिक्रमा के मुख्य रूप से दो क्रम प्रचलित है । पुष्टिमार्गीय वैष्णवों की यात्रा का क्रम प्रधानतः मथुरा, विश्राम घाट से प्रारम्भ होता है तथा अन्य वैष्णव सम्प्रदाय वृन्दावन से ही यात्रा का प्रारम्भ करते हैं । आगे के यात्रा क्रम तथा विश्राम स्थल लगभग समान ही है ।

प्रथम विश्राम

मथुरा से चलकर प्रथम विश्राम 'मधुवन' (एक दिन) रहता है । वहाँ के आस पास की स्थलियों से होकर (तालवन, कुमुदवन) यात्रा 'शान्तनु कुण्ड' स्थली पर दूसरा विश्राम करती है । यहाँ की स्थलियों के दर्शन कर (२ दिन बाद) परिक्रमा का तीसरा विश्राम होता है (इनका प्रसंग वर्णन मथुरा खण्ड में देखें) 'बहुलावन' । यहाँ लगभग दो दिन ठहर कर स्थलियों का दर्शन करती हुई यात्रा 'श्रीराधाकुण्ड' अथवा 'कुसुम सरोवर' पर चौथे विश्राम हेतु एक दिन के लिए ठहरती है । यहाँ की स्थलियों का दर्शन कर पांचवां विश्राम होता है गोवर्द्धन अथवा चन्द्र सरोवर । यहाँ विश्राम दो दिन का रहता है । यात्रा का छठा विश्राम होता है जतीपुरा यहाँ पुष्टि मार्गीय वैष्णवों की यात्रा अधिक (प्रसंग वर्णन श्रीगिरिराज खण्ड में देखें) समय ठहरती है । यात्रा का सातवां विश्राम होता है 'डीग' यहाँ यात्रा का निवास लगभग २ दिन का रहता है ।

'घाटा' ब्रज यात्रा का आठवां विश्राम स्थल है। यहाँ से नवें विश्राम स्थल हेतु यात्रा 'कामवन' लगभग तीन दिन ठहर कर सभी स्थलियों (प्रसंग वर्णन कामवन खण्ड में देखें) में विचरण करती है। 'बरसाना' यात्रा का दसवां विश्राम स्थल है। यहाँ से 'संकेत' यात्रा (प्रसंग वर्णन वृषभानुपुर खण्ड में देखें) का ग्यारहवां तथा 'श्रीनन्दगाँव' यात्रा का बारहवां विश्राम होता है। नन्दगाँव में लगभग तीन दिन विश्राम रहता है और ब्रज यात्रा का तेरहवां विश्राम स्थल है 'बड़ी बठैन'। 'कोटवन' यात्रा का चौदहवां विश्राम है तथा पन्द्रहवां विश्राम स्थल 'कोसी' होता है। 'पैगाम' यात्रा का सोलहवां विश्राम तथा शेरगढ़ सत्रहवां विश्राम स्थल रहता है। चीरघाट यात्रा का अठारहवां विश्राम स्थल है तथा 'बच्छवन' यात्रा का उन्नीसवां विश्राम स्थल है। (प्रसंग वर्णन श्रीनन्दगांव में देखें)

ब्रज यात्रा का बीसवां विश्राम स्थल है 'वृन्दावन'। यहाँ लगभग तीन दिन यात्रा ठहरती है। (प्रसंग वर्णन श्रीवृन्दावन खण्ड में देखें) यहाँ से 'लोहवन' यात्रा का इक्कीसवां विश्राम स्थल है तथा 'बलदेव' यात्रा का बाईसवां विश्राम स्थल रहता है।

गोकुल यात्रा का तेईसवां विश्राम (प्रसंग वर्णन महावन-गोकुलखण्ड में देखें) स्थल रहता है। गोकुल की तथा आस-पास की स्थलियों का दर्शन कर मथुरा विश्राम घाट पर आकर यमुना पूजनोपरान्त यात्रा का पूर्ण विश्राम हो जाता है।

इसके अतिरिक्त सुविधानुसार कभी-कभी परिक्रमा-क्रम में परिवर्तन भी किये जाते हैं।

लीला स्थलियाँ, ब्रज की प्रकृति तथा ब्रज भूमि का योगदान

ब्रज प्रेमियों ने, भावुक भक्तों ने तथा रसिक महानुभावों ने, 'ब्रज' को शास्त्र वेत्ताओं तथा वैयाकरणों की परिभाषाओं के अतिरिक्त भी कुछ देखा है-और उसी अनुसार अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया है।

'ब्रज' यही, यही भौम वृन्दावन अथवा ब्रज जो गोलोक धाम की छाया-प्रतिछाया-सा सभी के भौतिक चक्षुओं के लिए सुलभ हो रहा है, केवल नेत्र भेद से ही, स्थूल दीख रहा है। दिव्य चक्षुओं के लिए स्थूलता के कोई बन्धन नहीं। वहाँ प्रिया-प्रियतम का लीला विहार सर्वदा गतिमान है और इस चौरासी कोस भूमि में उसी नित्यविहार का आस्वादन प्रतिक्षण हो रहा है।

श्रीपाद जीव गोस्वामी के शब्दों में ब्रज को गोलोक से भी श्रेष्ठ कहा गया है-क्योंकि भौम वृन्दावन अथवा 'ब्रज', यहाँ वास करने वालों को गोलोक धाम का दर्शन/प्राप्ति कराने वाला है, अतः श्रेष्ठ कहा है।

ब्रज की प्रकृति जड़ नहीं चेतन है। श्रीकृण की लीला, ब्रज में सदा सर्वदा गतिमान रहती है। भक्त हृदय आज भी इसका आस्वादन कर रहे हैं। लीला स्थलियों का सेवन, लीलाओं के चिन्तन को लेकर ही अभीप्सित है और यह चिन्तन कब उन लीलामय, श्रीकृष्ण तथा उनकी अभिन्न प्राणा सखियों के प्रत्यक्ष दर्शन करा उस लीला का आस्वादन करा दे, यह कौन कह सकता है ?

ब्रज की प्रकृति, यहाँ की वृक्षावली, यहाँ की सुरमणीय निकुञ्जें, पनघट, यमुना तट, सभी श्रीकृष्ण की सुरस लीलाओं से जुड़ी हैं, यह स्थलियाँ कृपावश आस्वादन कराने को आज भी तत्पर हैं-उसके लिए उत्कट चाह, एवं सतत माँग आवश्यक है।

ब्रज भूमि दिव्य है, चिन्मय है। यहाँ की प्रकृति केवल प्रकृति मात्र नहीं है। लीला परिकर ही है जो श्यामसुन्दर की इच्छानुसार वपु धारण कर श्यामसुन्दर की केलि में सहायिका तो बनती ही है, लीला का उपकरण बन लहलहाती है। लीला परिकर, यह ब्रज की प्रकृति अपने आश्रितों को श्रीकृष्ण दर्शन कराने वाली है। अनेक महानुभावों की सुरस अनुभूतियाँ, इन सरस निकुञ्जों से, यहाँ की वृक्ष वल्लरियों से, यमुना तट, पनघट तथा ब्रज की अनेक स्थलियों से जुड़ी है। श्रीजगन्नाथ प्रसाद भक्तमालीजी महाराज, प्रायः कहा करते थे,

श्री कृष्ण की लीला का दर्शन कराने के लिए वृक्ष तथा वल्लरियाँ सक्षम हैं तथा पूर्ण कृपा प्राप्त कराने वाली हैं। (मानव देह में) कहीं किसी के आश्रय में, किसी स्थिति में किञ्चित् विपरीत सम्भावना हो सकती है, परन्तु ब्रज की इन सिद्धदेहा श्रीकृष्ण लीला परिकर, प्रकृति का आश्रय ग्रहण कर, सच्चे मन से प्रार्थना करने पर यह वृक्ष लताएँ श्री कृष्ण दर्शन कराने वाली हैं। श्री गिरिराज तलहटी में 'जान' और 'अजान' वृक्ष इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। आज भी अनेक ऐसे उदाहरण देखे जा सकते हैं, प्रमाण स्वरूप अनुभव प्राप्त अनेक महात्मा आज भी सदेह विराजमान हो हमारा पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। किसी विशेष स्थली पर जाकर हमारा मन जब किसी सुरसता में डूब, तन्मय सा हो जाता है, यदि यह अनुभव हमारा भी है, तो अन्य किसी प्रमाण की खोज में हम क्यों हैं ?

यहाँ की स्थली अपने कंटीले पथ को बुहार प्रिया प्रियतम के विहार हेतु पथ साफ सुथरा कर लीलोपयोगी बना देती है। ब्रज भूमि, तृण तथा कङ्करों, पत्थरों को अपने में तिरोहित कर विहार के योग्य स्थली बना अपने को कृतकृत्य समझती है।

श्रीगिरिराज की तलहटी, अनेक सन्तों महानुभावों की अनुभूतियों को साकार कर रही है। दानघाटी में विराजमान उच्चकोटि के महात्मा श्रद्धेय पं.गयाप्रसाद जी से जब पूछा- "महाराज, अनुभवी जनों का मत है कि श्रीगिरिराज की शरण में आने पर वे अपनी अहैतुकी कृपा की अनुभूति अवश्य करवाते हैं - आप यहाँ बहुत समय से विराजते हैं। आपने तो यहाँ अनुभव किया होगा।" उन्होंने जैसा कहा, उसे ज्यों का त्यों लिखने की चेष्टा करूँगा। उनके छोटे-छोटे, गम्भीर शब्द थे, "रसिकन ने साँची कही है। मेरौ कहा है, मैं तो पेट भरबे की ताँई पर्‌यो हूँ", आप अनुमान लगा लेंगे कि इस दैन्योक्ति से क्या स्पष्ट हो रहा है।

श्रीप्रियाशरणजी महाराज ब्रज तथा ब्रज की स्थलियों के प्रति गूढ़ निष्ठावान रहे। वे प्रायः कहा करते थे, "भैया। श्यामसुन्दर का नाम, तुम ले सकोगे। तुम्हारी सामर्थ्य ही क्या है। उनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना तुम्हारे बस का नहीं, अतः तुम जैसे तैसे धाम की इन लीला स्थलियों की शरण में पड़े रहो वह स्वयं प्रिया-प्रियतम की प्रीति प्रदान करा देंगी।" नन्दगाँव में एक महात्मा श्रीमदनमोहनदास बाबाजी महाराज की ब्रज की इन लीला स्थलियों, यहाँ की रज, वृक्षावली तथा धाम के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा थी वे कहते, "भैया। यदि स्थली, तुम्हारे लिए प्रकट नहीं हुई और चिन्मय दर्शन नहीं कराया तो फिर बात ही क्या बनी" उनकी धारणा थी कि यह स्थलियाँ साधक को आश्रय प्रदान कर प्रिया-प्रियतम की प्रीति प्राप्त करवाने वाली हैं।

श्रीराधा माधव संस्थान, गोरखपुर की ओर से 'संकेत' ग्राम में एक वृक्ष की सुरक्षा हेतु परकोटा आदि बाँध व्यवस्था की गई थी। पीपल का वह वृक्ष अभी तीन वर्ष पहले भी सभी के लिए दृष्टिगोचर था। गतवर्ष वह वृक्ष सूखने पर काट लिया गया। वह वृक्ष अनेक महात्माओं की लीलानुभूतियों से सम्बन्धित है। आज से लगभग पन्द्रह बीस वर्ष पहले इमलीतला के सामने की ओर खेतों में तीन वृक्षों की विचित्र घटना जिन्होंने देखी है, वे महानुभाव आज भी श्रीवृन्दावन में विराजमान हैं। उस वृक्ष की एक डाल काटने पर रुधिर की बूँदें टपकती हुई अनेक महानुभावों ने देखी हैं। दाऊजी की बगीची में नीम का वह वृक्ष जो रामदास बाबाजी के संकीर्तन के समय अपनी प्रफुल्लता का परिचय देता रहा अनेक भावुक भक्तों को आज भी अपनी उत्तुङ्गता की पताका फहरा, आकर्षित कर रहा है।

प्रकृति और लीला भिन्न नहीं है। प्रकृति, लीला उपकरण संयोजन में विविध रूपों में प्रिया-प्रियतम की केलि में सहायिका तो है ही, लीला परिकर होने के कारण यह सजीव है तथा लीलोपयोगी वपु धारण कर युगल की रसमयी केलि में शोभायमान हुई, लीला उपकरण बनी, सौभाग्यशालिनी है।

नन्द भवन की ओर जाती रसमयी भीर की उमङ्ग तरङ्गों में समाई प्रिय मिलन व्यग्रता, प्रियतम की रूप-माधुरी, भोर में अलसायी शोभा श्री को आवृत किये सुचिक्कन कच लटों से सुशोभित माधुरी छवि को निहार रसीले संकेतवश, किसी लीला की भूमिका बनाती ब्रजबाला के लीला संयोजन की स्मृति, किसे न विवश परवश कर देगी।

गौ-चारण वीथिका से जाते गउओं के पीछे ही-ओ, ही-ओ करते, कभी बङ्क विलोकन से, कभी मधुर हास-झङ्कार से, कभी अपने पट को सम्हालने के मिस किसी को रसामन्त्रण देते और कभी अपने सखाओं से परिहास वचन कह अपनी प्रियाओं को वन, कुञ्ज-निकुञ्जों का अता-पता देते श्यामसुन्दर की रस माधुरी किसे न मत्त कर देगी। हे सखे ! आज हम लोग नन्दग्राम की 'बहक वन' के पास की सुरस निकुञ्ज में नहीं जावेंगें क्योंकि वहाँ का जल शीतल तो है परन्तु गउओं के पान करने का जल वहाँ से कुछ दूरी पर है, ऐसा कह सखियों को विभिन्न लीला स्थलियों का अता-पता देते नन्दनन्दन किसे न प्रकट होकर आनन्दित कर देंगे।

वन वीथियों में होकर दधि दूध बेचने को जाती सखियों की भीर को देख दूर से वंशी वादन कर, चटपटी लगा रसीले आमन्त्रण दे विभिन्न कुञ्जों में रस विहार की भूमिका बना श्यामसुन्दर, किसे न अपने रसीले पाश की त्वरा लगा देंगे।

पनघट पर, घट भरने के मिस, नेह घट भरे यह ब्रज बालाएँ केवल जल भरने ही नहीं जातीं। "पनघट जान दै री, पनघट जात हैं।" अतः हे सखि !

मुझे पनघट पर जाने दे, अन्यथा मेरा प्रियतम से मिलने का पन घट जावेगा। इस पन की सुरक्षा हेतु घट लिए-ब्रज बालाओं की रस मसी भीर पनघट पर जाती है-और इस रसीली स्थली पर जा, प्रियतम की किसी रसीली चितवन से यह ब्रज बालाएँ, जब जल भरने के मिस गागर लटकाती हैं और उधर बज उठती है रसीली बाँसुरी, तो यह बालाएँ घट भरकर ले आती हैं अथवा घट रीते लौटा लाती हैं, भला किसे सुधि रहती है। हे सखि ! यह सब उस पनघट का ही तो प्रकाश है।

कभी दूध-दही बेचती बालाओं को "गोविन्द लेहु लेहु कोऊ गोविन्द" की चटपटी लगा देते हैं।

यमुना तटवर्ती निकुञ्जों में कलिन्द नन्दिनी की एकान्तिक वीथियों में, रसीली छेड़-छाड़ से, रार-तकरार से, ऐंठ-उमेंठ से, मधुर चितवन से, मधुर बतरान से, जल केलि का रसास्वादन कर, कौन न, रसमग्न हो जावेगी।

गोचारण के मिस आई सखाओं की भीर, उधर से छोटी-छोटी, पग-डण्डियों से उतरकर आती इन ब्रज बालाओं को, इधर उधर से प्रकट हो मार्ग रोक गो-रस के मिस किसी रस विशेष की माँग करते यह प्रणयी रिझवार, कभी दान-मान की रसीली योजनाओं में मग्न हो जाते हैं-यह सब हे श्रीगिरिराज ! तुम्हारे अनुग्रह से ही तो सम्भव हो रहा है।

श्रीराधा तथा श्याम-कुण्ड पर मध्यान्होपरान्त ललिता-नन्ददा-निकुञ्ज में से हो, मदन-सुखदा-निकुञ्ज में विराजे प्रियतम श्यामसुन्दर, श्री विशाखा जी को रस में सराबोर करते सभी को आनन्द प्रदान कर रहे हैं।

गिरिराज की यह एकान्तिक गुफाएँ रस विहार की लीला में परिणत हुई शयन केलि की सरस झाँकी से सिक्त रहती हैं और आभीर कुमारियों की यह रसमयी चहल-पहल दान की अनेक सरस लीलाओं में मौन, मूक हो जाती हैं।

गह्वर वन, की रसमयी 'साँकरी खोर' की साँकरी वीथिका मान की वर्जना-तर्जना से वर्द्धित दान केलि में परिणत हुई, विलास गढ़ी में दिव्य रस विलास में जब परिणत हो जाती है तो यह लीला स्थलियाँ उन रसकणों की उच्छलन को अपने में भर लेती हैं।

यह लीला स्थलियों का ही तो सुरस अनुग्रह है, जो प्रिया-प्रियतम की एकान्तिक सरस लीलाओं से सिक्त-सिञ्जित हुई, उसी वातावरण को अपने आँचल में सम्हाल आज, हम सभी के लिए वितरण कर उन लीलाओं को प्रत्यक्ष कर रही हैं, उन्हीं लीलाओं का आस्वादन कराने को व्यग्र हो रही हैं।

ब्रज भूमि मोहिनी

मथुरा

(श्री कृष्ण जन्म सौभगमद-गर्वित स्थली)

प्रथम खण्ड

देवक्या पालितो गर्भे लालितोऽङ्क यशोदया ।
यशोदयायुतो बालो गोपालो रमतां हृदि ॥

आस-पास की अन्य स्थलियाँ

1. अम्बिकावन
2. कुमुदवन
3. गणेशरा (गन्धेश्वर तीर्थ)
4. तालवन (तारसी ग्राम)
5. दतिया
6. मधुवन (माहोली ग्राम)
7. माधुरी कुण्ड
8. बहुलावन (वाटी ग्राम)
9. सतोहा (शान्तनु कुण्ड)

"भूगोल चक्रे सप्तपुर्यो भवन्ति तासां मध्ये साक्षात्
ब्रह्म गोपालपुरीरीति चक्रेण रक्षिता हि वै मथुरेति" ॥

(श्रीगोपाल तापनी)

सर्वशक्तिमान भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जन्म-स्थान 'मथुरा' अप्राकृत तथा मायातीत है। भूमण्डल में अयोध्या, मथुरा, माया, काञ्ची, काशी, अवन्ति तथा द्वारावती ये सप्तपुरियाँ हैं। मथुरापुरी सच्चिदानन्दमयी है। चक्र द्वारा रक्षित होने के कारण प्रलयादि विकारों का प्रभाव इस पर नहीं होता। कैसे हो ! जहाँ साक्षात् श्रीकृष्ण का प्राकट्य हुआ है, वहाँ किसी भी प्रकार के अशुभ की आशंका ही कैसी ! यह वैकुण्ठ से भी अधिक प्रशंसनीय है।

यह नगरी अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक युग में भी इसकी स्थिति के प्रमाण उपलब्ध हैं। त्रेतायुग में शत्रुघ्नजी द्वारा मधु राजा के पुत्र लवणासुर के वध का वृत्तान्त सर्वविदित है। द्वापर में श्रीकृष्ण की जन्मस्थली होने के कारण मथुरा की महिमा और अधिक हो गई है। श्रीकृष्णद्वैपायन व्यासजी का मथुरा (व्रज) से सम्बन्ध प्रकट ही है। वाराह पुराण के अनुसार मथुरा में 'सोम' तथा 'वैकुण्ठ' तीर्थों के मध्य श्रीकृष्ण गङ्गा तीर्थ जो अब भी विद्यमान है, को व्यासजी की तपस्थली होने का गौरव प्राप्त है।

आज भी जल के अनेक स्रोत वर्षा के दिनों में अथवा बाढ़ के समय जगह-जगह श्रीयमुना की ओर प्रवाहित अथवा विलय होते दीखते हैं। पूर्व में जिन दिनों जल का प्रवाह अधिक रहता था, कदाचित् यह सरस्वती तीर्थ, कृष्ण-गंगा तथा धारापतन आदि तीर्थों में जल-प्रवाह स्थायी रूप में विद्यमान था। अद्यावधि इनकी महत्ता सर्वत्र विख्यात है।

अनेक उतार चढ़ाव आते रहे, मथुरा नगरी के प्राचीन स्थल ध्वंस प्रायः भी हो गये, परन्तु श्रीयमुना के तट पर सुरमणीय विशाल मथुरा नगरी की स्थिति उसी प्रकार से बनी रही।

यहाँ के विशाल भवन, गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ, मणिमण्डित यमुना तट, सुरमणीय राजमार्ग, धनियों के महल, रमणीय उद्यान, प्रजा वर्ग के सभा भवन और साधारण लोगों के निवास गृह नगर की शोभा बढ़ा रहे हैं।

आज भी श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओं से सम्बन्धित, अनेक रसिकों की अनुभूतियों से संश्लिष्ट, अनेक ठाकुर स्वरूपों के दिव्य चमत्कारों से ओत-प्रोत तथा आचार्यों, भक्तों के जीवन की मधुर स्मृतियों को अपने गर्भ में संजोए मथुरा नगरी वैष्णव मात्र को अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

यह वही नगरी है जहाँ अखिल ब्रह्माण्डनायक श्रीकृष्ण कारागार में अपनी अद्भुत रूप-छटा दिखलाकर इस धरा-धाम को सुशोभित करने के लिए प्रकट हुए। यहाँ की वीथियों में, उद्यानों में, विशाल बाजारों में श्रीकृष्ण तथा बलराम विचरण करते रहे हैं। उनकी रूप मधुरिमा से पूर्णतः अवगत मथुरा की स्त्रियाँ बड़ी आतुरी से उनकी छवि माधुरी का पान करती रही हैं।

श्रीकृष्ण मथुरा में पधार रहे हैं यह जानकर चकित विस्मित-सी ये पुरस्त्रियाँ एक उन्माद में भरी बावरी-सी अटपटा श्रृंगार किये अपने घर के कृत्यों को ज्यौं का त्यौं छोड़ अपनी-अपनी अटारियों पर आ विराजीं। श्रीलक्ष्मीजी को आनन्दित करने वाले इन श्यामसुन्दर की श्यामल सुषमा को निहार चंचल चितवन तथा मुस्कान मधुरिमा का पान कर, यह मथुरावासिनी युवतियाँ अपनी प्रणय-पगी भावनाओं के वशीभूत हुईं, नेत्रों द्वारा भगवान् को अपने हृदय में ले जाकर उनके आनन्दमय स्वरूप का आलिंगन कर अपनी युग-युगों की पिपासा का शमन करती रही हैं।

यही नहीं, यहाँ की प्रत्येक स्थली श्रीकृष्ण चरणाङ्कों से चिन्हित है। उनकी विविध क्रीड़ाओं से स्पृष्ट है, उनकी विविध लीलाओं से ओत-प्रोत है।

श्रीकृष्ण की अलौकिक तथा दिव्य लीलाओं से संश्लिष्ट यह मथुरा नगरी केवल भौतिक चक्षुगोचर मथुरा ही नहीं हैं, प्रत्युत श्रीकृष्ण की दिव्य तथा चिन्मयी लीलाओं से इसका नित्य तथा शाश्वत सम्बन्ध है। यहाँ की स्थलियाँ दिव्य हैं, यहाँ की श्रीयमुना जी दिव्य हैं, उनके घाट चिन्मय हैं, उनके रजकण दिव्य हैं, यहाँ के विशाल भवन दिव्य तथा चिन्मय हैं, जहाँ श्रीकृष्ण अवतरित हुए हैं। यहाँ के बाजार, यहाँ के उद्यान, यहाँ के लोग दिव्य हैं, श्रीकृष्ण के निज जन हैं, लीला पार्षद हैं, अतः मथुरा का दिव्य वातावरण दिव्य चक्षुओं के लिए ही गोचर है।

अनेक लीला स्थलियाँ जो मूल रूप में श्रीकृष्ण की किसी न किसी लीला से संयुत हैं, आज भी सर्वसाधारण के लिए दर्शनीय हैं। श्रीकृष्ण जन्म-स्थली का निर्माण सर्वप्रथम श्रीकृष्ण भगवान् के प्रपौत्र श्रीबज्रनाभजी ने करवाया था। सर्वप्रथम मथुरा पर महमूद गजनवी ने आक्रमण किया तथा अनेक स्थलियों को ध्वंस प्रायः कर दिया। भगवान वासुदेव के मन्दिर की भव्यता का वर्णन करते हुए मीर मुन्शी अली-उत्वी एक जगह पर लिखते हैं कि इस विशाल मन्दिर के विषय में न तो लेखनी और न चित्र के द्वारा ही वर्णन किया जा सकता है। सुलतान महमूद ने इसी मन्दिर की विशालता के विषय में लिखा है कि इस भव्य इमारत को कोई अब बनाना चाहे तो कम से कम दस करोड़ दिनार (मुद्रा) और २०० वर्ष का समय लगेगा।

धीरे-धीरे शान्ति स्थापित हुई, इस मन्दिर का निर्माण सं. १२०७ में कन्नौज के राजा विजयचन्द्र ने पुनः करवाया। इस देवालय को भी सिकन्दर लोदी ने पुनः सं. १५७३ में नष्ट कर दिया। मन्दिर का निर्माण पुनः किया गया, इस की मनोरमता और चित्रकला का फ्रांसीसी यात्री तथा इटली के यात्रियों ने सन् १६६९ ई. में वर्णन किया है। औरंगजेब ने इस मन्दिर को भी १६६९ ई. में नष्ट करके मस्जिद का निर्माण करवाया। १८१५ ई. में समूचे कटरा केशव देव को बनारस के राजा पटनीमल ने मन्दिर निर्माण करवाने की इच्छा से खरीद लिया। लगभग जीर्ण-शीर्ण यह स्थली कुछ वर्ष पहले कल्याण के सम्पादक परम पूजनीय श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दारजी की प्रेरणा से भारत के अनेक भावुक भक्तों की आर्थिक सहायता से भव्य रूप लेकर विशाल मन्दिर के रूप में भक्तों के आराध्य श्रीकृष्ण की जन्मस्थली के नाम से गर्वित हो रही है।

कंस किला भग्नावशेष रूप में आज भी अपनी प्राचीनता का उद्घोष कर रहा है।

अहो मथुरा नगरी का तो कहना ही क्या है ? यह तो ब्रज की केन्द्र स्थली है, श्रीकृष्ण की जन्म-स्थली है, अतः वन्दनीय है।

स्वरूप

इदं पद्मं महाभागे सर्वेषां मुक्तिदायकम्।
कर्णिकायां स्थितो देवः केशवः क्लेषनाशनः॥

(आ० वा०)

मथुरा के स्वरूप के विषय में पुराणों में इसे पद्माकर कहा है। श्रीकेशवदेवजी पद्माकर इस पुरी के मध्य कर्णिका में विराजते हैं। पश्चिम पत्र में श्री हरदेव जी, (श्री गिरिराज जी में) विराजमान हैं, उत्तर की ओर श्रीगोविन्द देवजी (वृन्दावनमें) विराजमान हैं जिनके दर्शन करके मानव प्रलय पर्यन्त संसार पर गमनागमन के चक्र से छूट जाता है। पूर्व दिशा की ओर वाले पत्र पर विश्रान्ति नाम के भगवत् स्वरूप विराजमान हैं तथा दक्षिण की ओर वाले पत्र पर सर्व सिद्धि प्रदान करने वाले वराह देव विराजमान है।

माहात्म्य

विश्व मण्डल में भारतवर्ष श्रेष्ठ है, उसमें भी ब्रज का महत्त्व अद्वितीय है।

त्रिंशद् वर्ष सहस्राणि त्रिंशद् वर्ष शतानि च।
यत्फलं भारते वर्षे तत्फलं मथुरा-स्मरन्॥

(स्क० पु०)

जो फल भारत में अनेकानेक वर्ष निवास करने से प्राप्त होता है, वह फल मथुरा नगरी के एक बार स्मरण मात्र से प्राप्त हो जाता है।

यही नहीं मथुरा में जहाँ-तहाँ स्नान करने से जीव के समस्त पाप क्षय हो जाते हैं और पग-पग पर अश्वमेध यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है।

भगवान् श्रीमुख से कह रहे हैं -

न विद्यते च पाताले नान्तरीक्षे न मानुषे।
समस्त मथुरायां हि प्रियं मम वसुन्धरे॥

(आ० वा० पु०)

हे वसुन्धरे ! मथुरा के समान मेरा प्रिय स्थान निश्चय ही पाताल लोक में, मनुष्य लोक में तथा अन्तरिक्ष में भी नहीं है।

हरौ येषां स्थिरा भक्तिर्भूयसी येषु तत्कृपा।
तेषामेवहि धन्यानां मथुरायां भवेद्रति ॥

(प० पु०)

मथुरापुरी के प्रति उन्हीं लोगों की रति होती है, जिनकी श्रीकृष्ण में अविचल भक्ति है एवं श्रीकृष्ण की प्रचुर कृपा के पात्र हैं।

पुनः श्रीमुख से कह रहे हैं, "हे वसुन्धरे जब मैं शयन करता हूँ, उतने समय तक पृथ्वी के समस्त तीर्थ मथुरापुरी में ही निवास करते हैं।

जपोपवासो निरतो मथुरायां षडानन ।
जन्मस्थानं समासाद्य सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥

(स्क० पु०)

श्रीमथुरा धाम में जप उपवास करने वाले जन श्रीकृष्ण के जन्म-स्थान दर्शन का लाभ प्राप्त कर समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं।

ब्राह्मण-घातक, मद्यपायी, गोघाती, ब्रह्मचर्यभ्रष्ट मथुरा की परिक्रमा करने मात्र से उक्त समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं।

अन्य दूर देशों से आकर जो मनुष्य मथुरापुरी की परिक्रमा करते हैं उनके दर्शन मात्र से स्वर्गलोक आदि भी पाप से रहित हो जाते हैं।

यही नहीं यदि कोई 'मैं मथुरा में वास करूँगा' यह संकल्प भी कर लेता है तो समस्त बन्धनों से मुक्त हो जाता है और यदि-

न दृष्ट्वो मथुरा येन दिदृक्ष्वा यस्य जायते।
यत्र यत्र गतस्यास्य माथुरे जन्म जायते ॥

(प० पु०)

जिस किसी की मथुरा दर्शन करने की इच्छा हुई, परन्तु दर्शन करने से पहले उस की मृत्यु जहाँ कहीं भी हो जाती है, उसका जन्म निश्चय ही मथुरा में होता है। इसमें कोई शंका नहीं है। पुनः कहा-

मकारे च थु कारे च , र कारे चान्त संस्थिते ।
निष्पन्नो मथुरा शब्द ॐकारस्य ततः समः ॥
महारुद्रो मकारः स्यात् थुकारो विष्णु संज्ञकः ।
र कारोऽन्तस्थो ब्रह्मस्यात् त्रिशब्दं माथुरं भवेत् ॥
अतः श्रेष्ठतमं क्षेत्रं सत्यमेव भवत्युत ।
सत्रिदेव मयि मूर्तिर्मथुरा तिष्ठते सदा ॥

आदि 'मकार' मध्य में 'थू' कार अन्त में आकारन्त 'र' होने से मथुरा शब्द बना है । इसी से मथुरा ओंकार के समान है । 'म' कार श्रीमहारुद्र की संज्ञा है, 'थू' कार श्रीविष्णु रूप की और अन्तस्थित 'र' कार श्रीब्रह्मा की । इन्हीं रूपों से मथुरा शब्द का गठन हुआ है । इन्हीं कारणों से मथुरा श्रेष्ठ धाम है । वही मथुरा ब्रह्मादि त्रिदेवमय मूर्ति के स्वरूप में अवस्थित है ।

अहो मधुपुरी धन्या वैकुण्ठाच्च गरीयसी ।
दिनमैकं निवासेन हरौ भक्ति प्रजायते ॥
त्रिरात्रमपि ये तत्र वसन्ति मनुजा मुने ।
हरिदृश्यति सुखं तेषां मुक्तानापि दुर्लभम् ॥

अहो ! नारायण धाम वैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ मथुरा धाम धन्य है, जहाँ केवल एक दिन वास करने से श्रीहरि भक्ति प्राप्त हो जाती है । तीन रात्रि निवास करने वाले मुक्ति प्राप्ति के इच्छुक जीवों के लिये भी दुर्लभ प्रेम, श्रीहरि अवश्य ही प्रदान करते हैं ।

तत्र मध्ये तु यत्स्थानमर्धचन्द्रं व्यवस्थितम् ।
तत्रैव वासिनो लोका मुक्ति यान्ति न संशयः ॥
अर्धचन्द्रे तु यः स्नानं कारितो नियताशनः ।
तेनैव चाक्षया लोकाः प्राप्ता एव न संशयः ॥
अर्धचन्द्रे मता देवि मम लोकं ब्रजन्ति ते,
अन्यत्र तु मृता देवि अर्धचन्द्रे कृत क्रियाः ।
तेऽपि मुक्ति गमिष्यन्ति दाहदिकर नैविसा ॥

(आ० वा०)

मथुरा के मध्य में अर्ध चन्द्राकार पुण्य स्थली का विशेष महत्त्व है । यहाँ निवास करने वाले जन मुक्ति लाभ करते हैं । यहाँ पर मृत्यु को प्राप्त होने वाला व्यक्ति श्रीकृष्ण के निज धाम गोलोक धाम को सहज ही प्राप्त कर लेता है । यहाँ तक कि जिस किसी व्यक्ति के क्रिया कर्म यहाँ किये गये हों, वह भी मुक्ति का अधिकारी हो जाता है ।

मथुरावासिनां ये तु दोषं पश्यन्ति पामराः ।
ते स्वदोषं न पश्यन्ति जन्म मृत्यु सहस्रदम् ॥

(प० पु०)

मथुरावासी 'श्रीकृष्ण' के निजजन हैं । इनके दोष नहीं देखने चाहिए । जो व्यक्ति मथुरावासियों के प्रति दोष बुद्धि रखेगा वह अपने दोषों को देखकर 'सजग' होने के प्रति सदैव उदासीन रहेगा ।

मथुरा की महिमा अवर्णनीय है । भक्तप्रवर बिल्वमंगल जी महाराज ने मथुरा की इन्हीं वीथियों में मुस्कुराते मत्त गजेन्द्र की सी चाल से प्रेम विवश अपने प्राण सर्वस्व नन्दनन्दन तथा वृषभानु-नन्दिनी को विचरण करते देखा तथा गा उठे-

मौलिश्चन्द्रक भूषणे मरकत स्तम्भाभि रामं वपु-
र्वक्त्रं चित्र विमुग्ध हास मधुरे बाले विलोले दृशौ ।
वाचः शैशव शीतला मदगजश्लाघ्या विलासस्थिति-
र्मन्दमन्दमये क एष मथुरावीथीं मिथो गाहते ॥

(श्रीकृष्णकर्णामृत)

श्रीप्रिया-प्रियतम की विलासमयी स्थिति को, उनकी चंचल चितवन को निहार श्रीबिल्वमंगल जी महाराज विवश परवश से हो गये । प्रिया-प्रियतम की रसमयी चेष्टाओं का आस्वादन करते-करते वे तन्मय होते जा रहे हैं । मथुरा की वीथियों में प्रिया-प्रियतम को निहार सुखास्वादन कर रहे हैं ।

मयूरपिच्छधारी श्यामसुन्दर की मुस्कान-मधुरिमा ने जादू सा कर दिया । उस जादू से अभी वे सम्हले भी न थे कि चंचल चितवन सायकों ने हृदय को बिद्ध कर दिया, प्राणों में एक कसक सी उठने लगी- उस विलास स्थिति-का आस्वादन कर किसी रस दशा में मत्त हो वे बेसुध से हो गये । अस्फुट स्वर लहरी में उनके मुख से निःसृत हुआ, अहा ! यह लावण्य-माधुर्य के द्वय रस सिन्धु, मथुरा की वीथियों में विचरण करते अपनी रूप छटा का प्रसार कर रहे हैं ।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के प्रचार तथा प्रसार का प्रधान केन्द्र पूर्व में मुख्यतः मथुरा ही रहा है । प्रारम्भ में अनेक आचार्य इसी नगरी को सुशोभित करते रहे हैं, अतः धर्म प्रचार के सर्वांगीण विकास हेतु सभी सम्प्रदायों ने मथुरा नगरी को गौरवान्वित किया है ।

श्री श्रीमन्महाप्रभु वल्लभाचार्य जी महाराज मथुरा में पधारे, त्रिलोकी से न्यारी ब्रज मण्डल भूमि को देखा जो वनों से, वृक्षों की पंक्तियों से, सरोवरों तथा नदियों से, बागों तथा बगीचों से मन और नेत्रों को सुख प्रदान कर रही थी ।